

# जन्म पत्रिका

**HETAL DAMJI PATEL**

जन्म पत्रिका एक सर्वप्रिय मॉडल है। इसमें ज्योतिषीय गणनाएं, फलादेश व उपाय जैसे रत्न, रुद्राक्ष, मंत्र एवं दान आदि सहित 100 पेज से अधिक की रिपोर्ट तैयार होती है। इसमें गोचर सहित 5 साल का फलादेश व 5 साल का दशाफल दिया गया है। साथ ही इसमें अंक ज्योतिष फलादेश भी दिया गया है। यह किसी जातक के बारे में जानने के लिए अद्वितीय रिपोर्ट है।

जन्म पत्रिका में फलादेश के साथ बृहत ज्योतिषीय गणनाएं दी गई हैं जो कि किसी ज्योतिषी को या स्वयं को अपना भूतकाल समझने व भविष्यकाल का फलादेश जानने के लिए उत्तम हैं।



# HETAL DAMJI PATEL

28 Feb 1988

05:00 PM

Mandvi

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित हैं। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं हैं।

## HETAL DAMJI PATEL

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 28/02/1988  
दिन \_\_\_\_\_: रविवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 17:00:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 24:20:06 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Mandvi  
राज्य \_\_\_\_\_: Gujarat  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 22:50:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 69:21:19 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:52:35 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 16:07:25 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:12:45 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 02:37:29 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:15:57 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:54:54 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:38:57 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 15:24:20 कुम्भ  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 20:25:15 कर्क

### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: कर्क - चन्द्र  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: कर्क - चन्द्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पुनर्वसु - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: गुरु  
योग \_\_\_\_\_: सौभाग्य  
करण \_\_\_\_\_: बव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: मार्जार  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: जलचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: मेष  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: ही-हिना  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: स्वर्ण - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मीन

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	फाल्गुन	9
पंजाबी	संवत : 2044	फाल्गुन	16
बंगाली	सन् : 1394	फाल्गुन	15
तमिल	संवत : 2044	मासी	16
केरल	कोल्लम : 1163	कुंभम	16
नेपाली	संवत : 2044	फाल्गुन	16
चैत्रादि	संवत : 2044	फाल्गुन	शुक्ल 11
कार्तिकादि	संवत : 2044	फाल्गुन	शुक्ल 11

### पंचांग

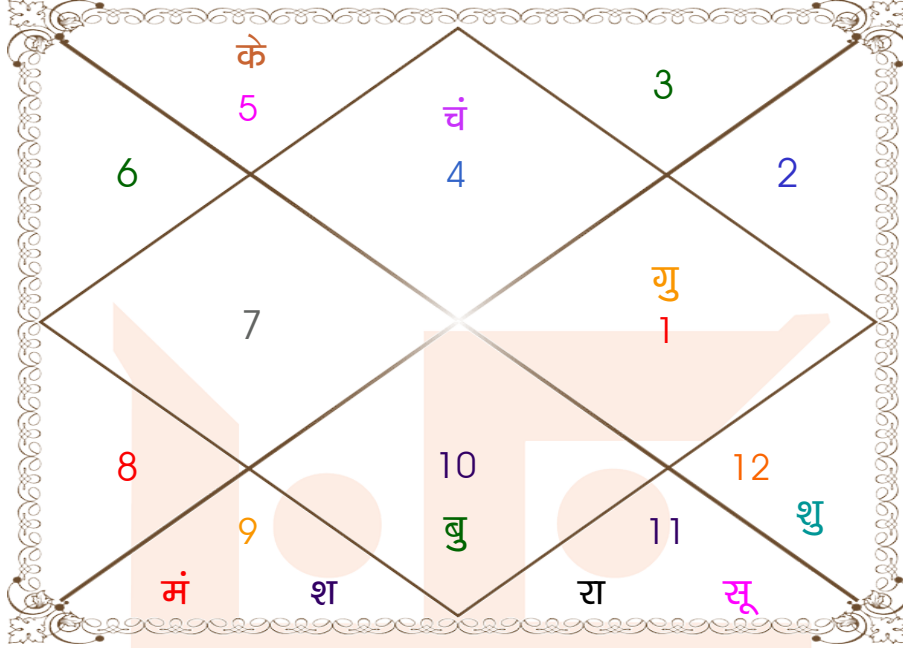
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 11  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:14:40  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 12  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : पुनर्वसु  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 23:41:08 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पुनर्वसु  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : सौभाग्य  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:43:59 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : सौभाग्य  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:14:40 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बव  
भयात \_\_\_\_\_ : 50:19:47  
भभोग \_\_\_\_\_ : 67:02:37  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : गुरु 3 वर्ष 11 मा 20 दि

### घात चक्र

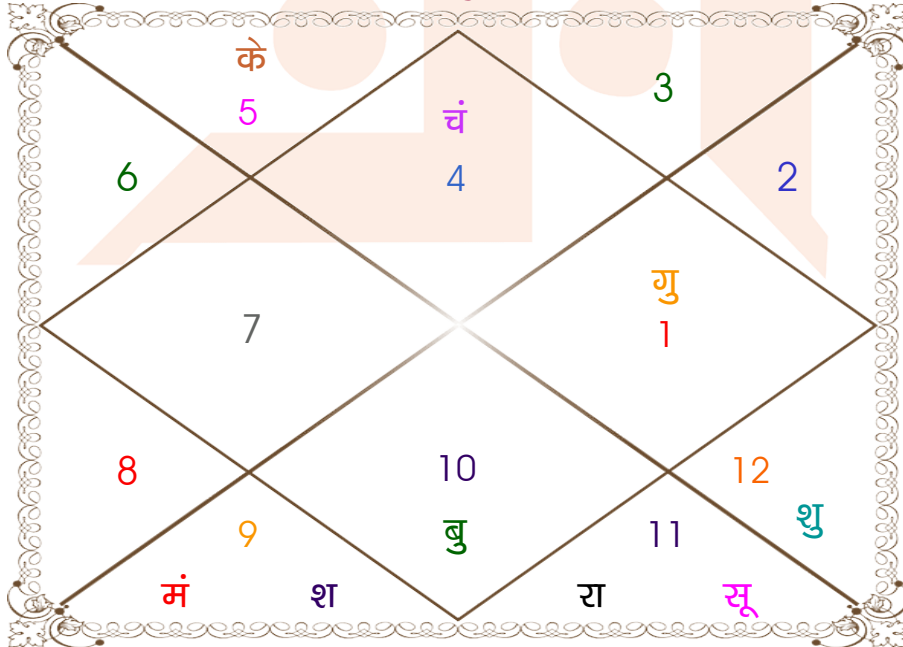
मास \_\_\_\_\_ : पौष  
तिथि \_\_\_\_\_ : 2-7-12  
दिन \_\_\_\_\_ : बुधवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : अनुराधा  
योग \_\_\_\_\_ : व्याघात  
करण \_\_\_\_\_ : नाग  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : श्वान  
लग्न \_\_\_\_\_ : तुला  
सूर्य \_\_\_\_\_ : सिंह  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मीन  
मंगल \_\_\_\_\_ : कन्या  
बुध \_\_\_\_\_ : मिथुन  
गुरु \_\_\_\_\_ : तुला  
शुक्र \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
शनि \_\_\_\_\_ : कर्क  
राहु \_\_\_\_\_ : धनु

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

शु	गु		
रा			चं
सू			ल
बु			के
श			
मं			

लग्न कुण्डली

	गु	शु	
			रा
			सू
चं		बु	
ल			
के			मं
			श

विंशोत्तरी  
गुरु 3वर्ष 11मा 20दि  
गुरु

28/02/1988

19/02/2096

गुरु	19/02/1992
शनि	19/02/2011
बुध	19/02/2028
केतु	19/02/2035
शुक्र	19/02/2055
सूर्य	18/02/2061
चन्द्र	19/02/2071
मंगल	18/02/2078
राहु	19/02/2096

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 5मा 29दि

धान्या

28/08/2024

28/08/2027

धान्या	27/11/2024
भ्रामरी	29/03/2025
भद्रिका	28/08/2025
उल्का	27/02/2026
सिद्धा	28/09/2026
संकटा	29/05/2027
मंगला	29/06/2027
पिंगला	28/08/2027

# गणना

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग हैं।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

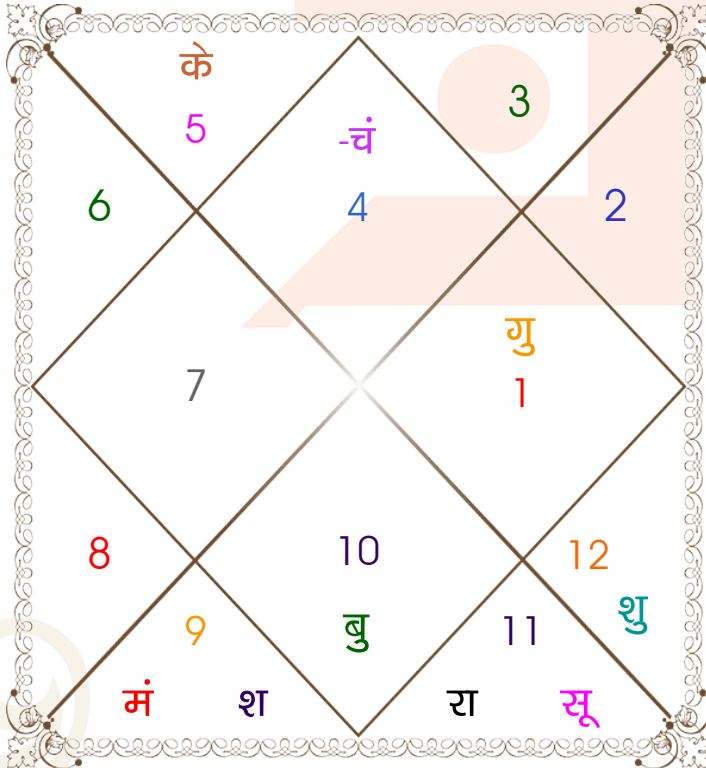
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	20:25:15	318:48:35	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	---
सूर्य			कुंभ	15:24:20	01:00:15	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र			कर्क	00:01:18	11:54:03	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	चंद्र	स्वराशि
मंगल			धनु	10:23:10	00:40:27	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	मित्र राशि
बुध			मक	20:09:01	00:27:55	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	केतु	सम राशि
गुरु			मेष	04:27:04	00:11:46	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	चंद्र	मित्र राशि
शुक्र			मीन	28:25:26	01:08:41	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	उच्च राशि
शनि			धनु	07:24:06	00:03:59	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	29:27:57	00:02:04	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	29:27:57	00:02:04	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	06:47:16	00:01:50	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	---
नेप			धनु	15:59:49	00:01:22	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	---
प्लूटो	व		तुला	18:50:06	00:00:29	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	---
दशम भाव			मेष	18:07:01	--	भरणी	--	2	मंगल	शुक्र	राहु	--

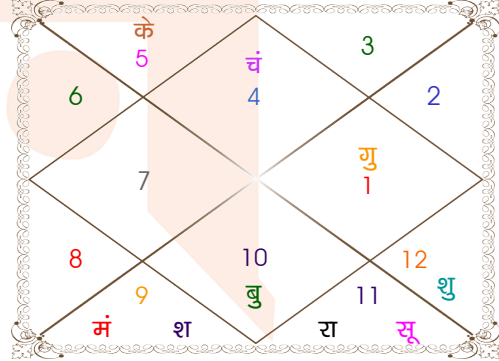
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:33

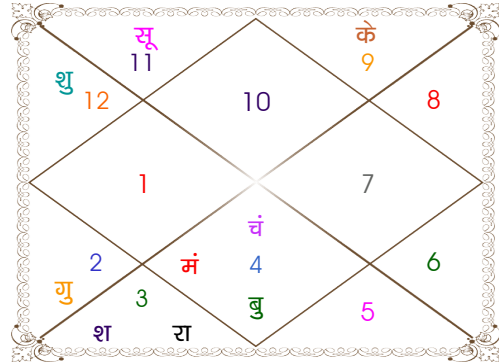
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 05:02:13	कर्क 20:25:15
2	सिंह 05:02:13	सिंह 19:39:11
3	कन्या 04:16:08	कन्या 18:53:06
4	तुला 03:30:03	तुला 18:07:01
5	वृश्चिक 03:30:03	वृश्चिक 18:53:06
6	धनु 04:16:08	धनु 19:39:11
7	मकर 05:02:13	मकर 20:25:15
8	कुम्भ 05:02:13	कुम्भ 19:39:11
9	मीन 04:16:08	मीन 18:53:06
10	मेष 03:30:03	मेष 18:07:01
11	वृष 03:30:03	वृष 18:53:06
12	मिथुन 04:16:08	मिथुन 19:39:11

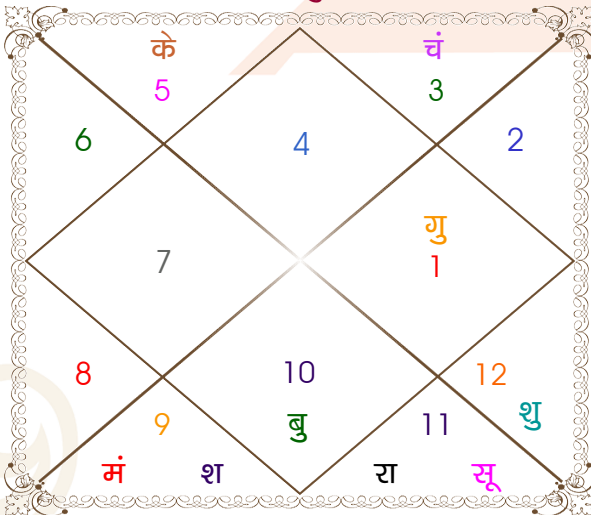
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	20:25:15
2	सिंह	16:21:11
3	कन्या	15:55:26
4	तुला	18:07:01
5	वृश्चिक	20:22:35
6	धनु	21:08:44
7	मकर	20:25:15
8	कुम्भ	16:21:11
9	मीन	15:55:26
10	मेष	18:07:01
11	वृष	20:22:35
12	मिथुन	21:08:44

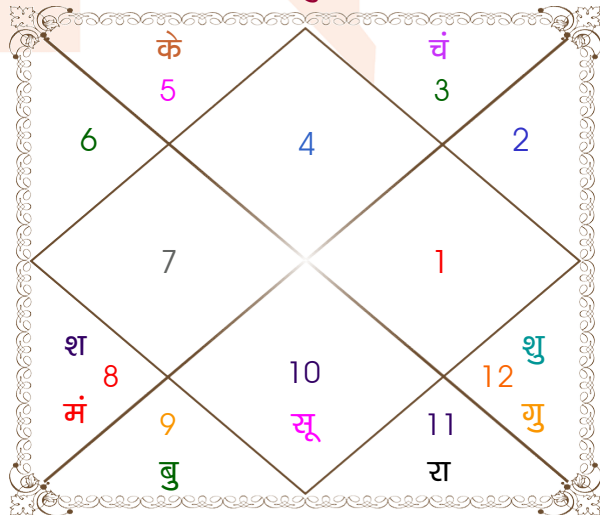
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली

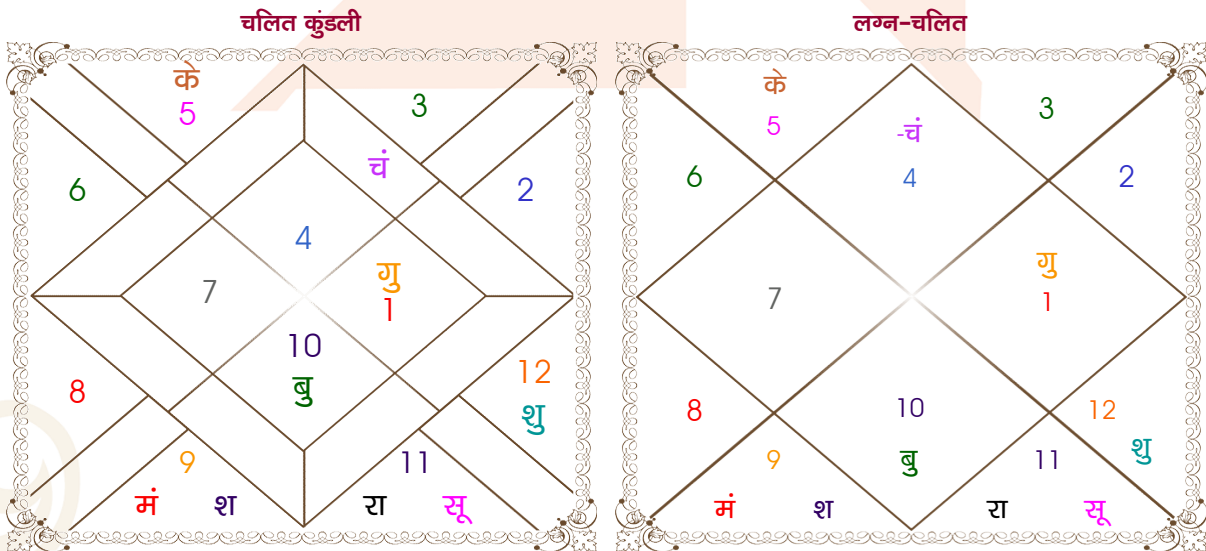


## कारक, अवस्था, रश्मि

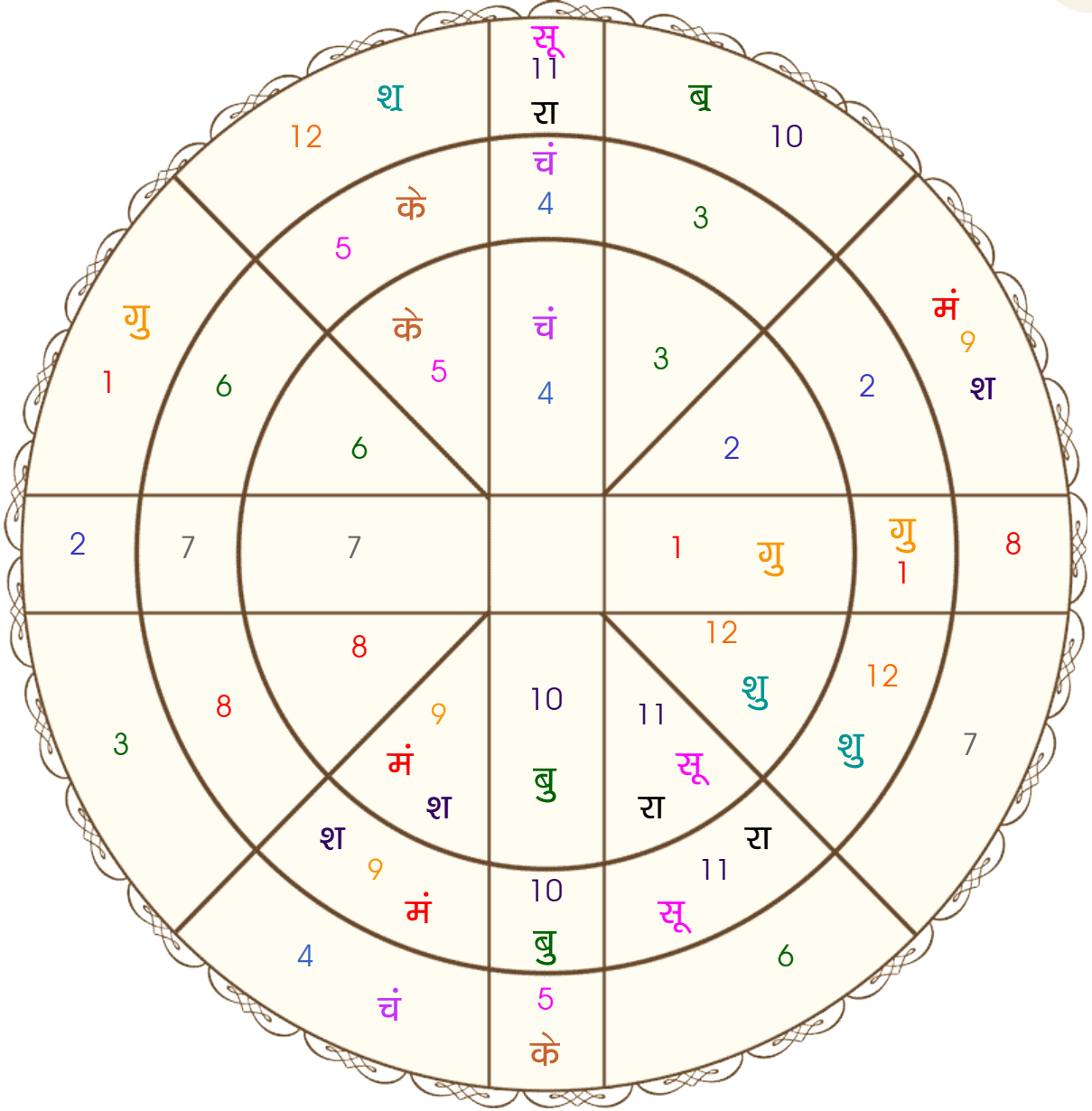
ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	भातृ	पितृ	युवा	खल	कौतुक	6.97	40 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	स्वस्थ	शयन	9.22	32 %
मंगल	मातृ	भातृ	कुमार	मुदित	कौतुक	3.68	40 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	कुमार	शान्त	नेत्रपाणि	1.83	36 %
गुरु	ज्ञाति	धन	बाल	मुदित	भोजन	3.48	74 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	बाल	दीप्त	गमन	23.81	41 %
शनि	पुत्र	आयु	कुमार	शक्त	उपवेशन	1.84	76 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	मुदित	कौतुक	0.00	32 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	कौतुक	0.00	32 %
<b>कुल</b>						<b>50.83</b>	

### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा



## सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

# कृष्णमूर्ति पद्धति

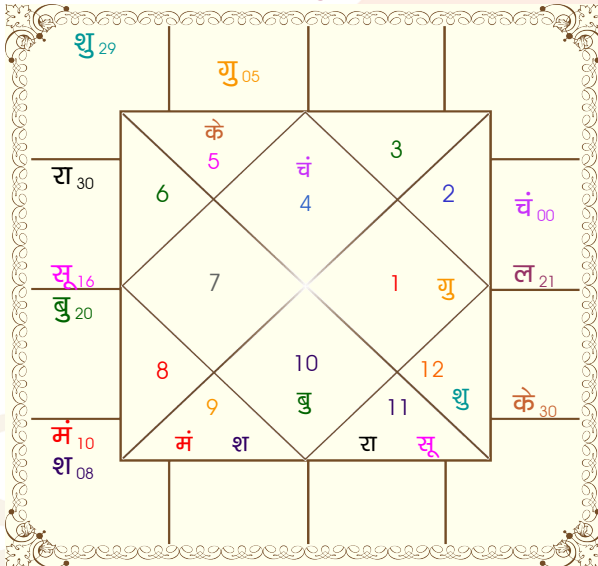
भोग्य दशा काल : गुरु 3 वर्ष 10 मास 5 दिन

ग्रह						निरयण भाव								
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	15:30:35	शनि	राहु	शुक्र	शुक्र	1	कर्क	20:31:30	चंद्र	बुध	शुक्र	गुरु
चंद्र		कर्क	00:07:32	चंद्र	गुरु	चंद्र	बुध	2	सिंह	16:27:25	सूर्य	शुक्र	चंद्र	राहु
मंगल		धनु	10:29:24	गुरु	केतु	शनि	सूर्य	3	कन्या	16:01:41	बुध	चंद्र	शनि	बुध
बुध		मक	20:15:16	शनि	चंद्र	केतु	शनि	4	तुला	18:13:16	शुक्र	राहु	चंद्र	मंगल
गुरु		मेष	04:33:19	मंगलकेतु	चंद्र	शुक्र		5	वृश्चि	20:28:50	मंगलबुध	शुक्र	गुरु	
शुक्र		मीन	28:31:41	गुरु	बुध	शनि	केतु	6	धनु	21:14:59	गुरु	शुक्र	गुरु	शुक्र
शनि		धनु	07:30:21	गुरु	केतु	राहु	मंगल	7	मक	20:31:30	शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र
राहु	व	कुंभ	29:34:12	शनि	गुरु	चंद्र	मंगल	8	कुंभ	16:27:25	शनि	राहु	शुक्र	गुरु
केतु	व	सिंह	29:34:12	सूर्य	सूर्य	राहु	गुरु	9	मीन	16:01:41	गुरु	शनि	गुरु	शुक्र
हर्ष		धनु	06:53:31	गुरु	केतु	राहु	शुक्र	10	मेष	18:13:16	मंगलशुक्र	राहु	राहु	
नेप		धनु	16:06:04	गुरु	शुक्र	सूर्य	केतु	11	वृष	20:28:50	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शुक्र
प्लूटो	व	तुला	18:56:20	शुक्र	राहु	चंद्र	केतु	12	मिथु	21:14:59	बुध	गुरु	गुरु	सूर्य

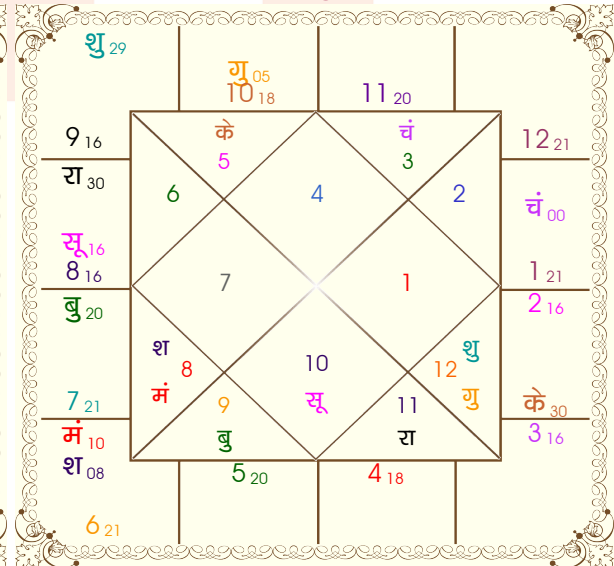
के.पी. अयनांश : 23:35:18

फॉरच्युना : धनु 05:08:28

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



## कारकत्व एवं स्वामित्व

### भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- बुध-
2	सूर्य- मंगल, गुरु, शनि, केतु+
3	बुध- शुक्र-
4	शुक्र-
5	मंगल, शनि,
6	चंद्र- बुध, गुरु- शुक्र, राहु-
7	सूर्य, शनि- केतु,
8	सूर्य, शनि- राहु,
9	चंद्र+ गुरु, शुक्र, राहु+
10	मंगल-
11	शुक्र-
12	चंद्र, बुध+ शुक्र-

### ग्रह कारकत्व

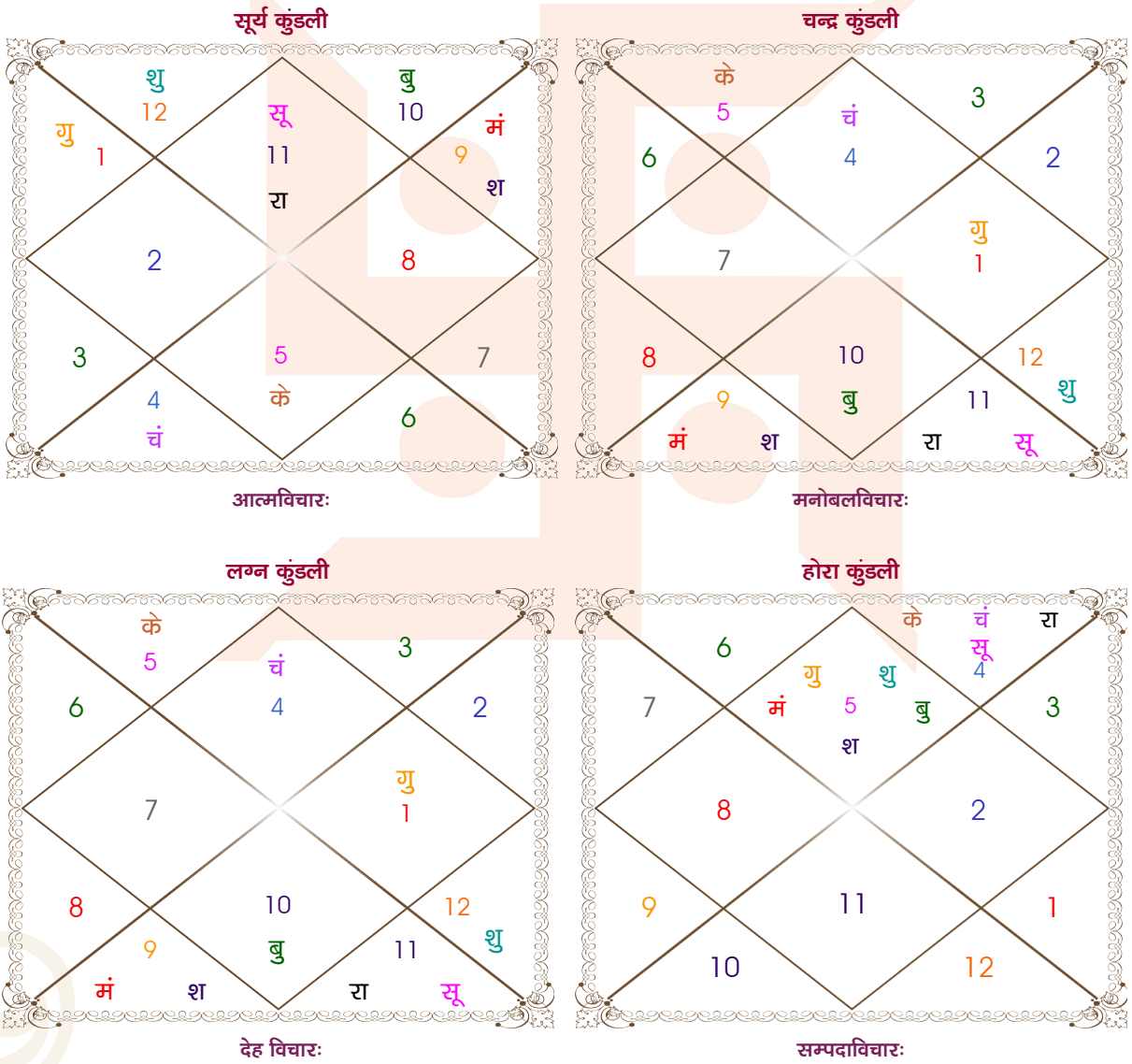
ग्रह	भाव
सूर्य	2- 7, 8,
चंद्र	1- 6- 9+ 12,
मंगल	2, 5, 10-
बुध	1- 3- 6, 12+
गुरु	2, 6- 9,
शुक्र	3- 4- 6, 9, 11- 12-
शनि	2, 5, 7- 8-
राहु	6- 8, 9+
केतु	2+ 7,

### स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

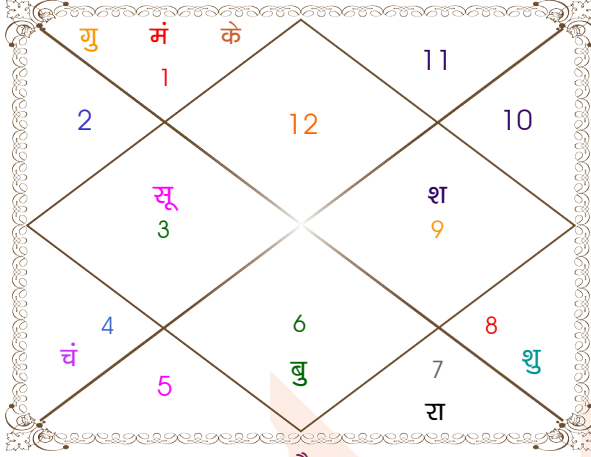
## षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

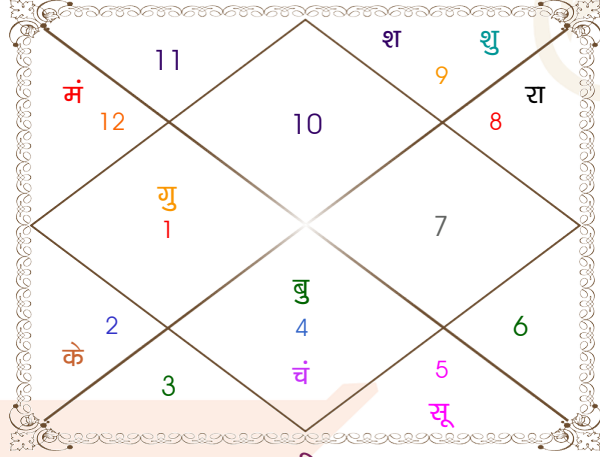


# षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

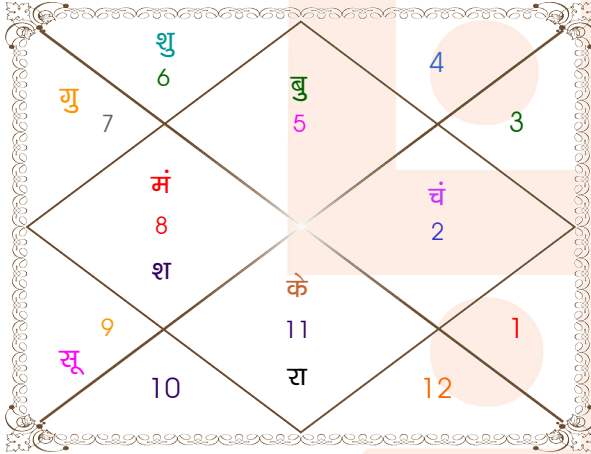


चतुर्थाश कुंडली



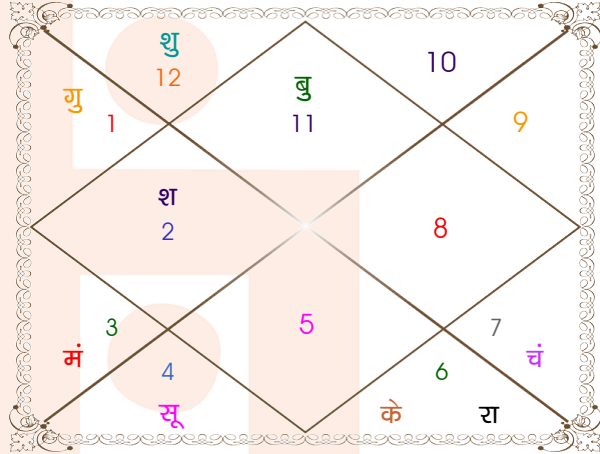
भातृसौख्यम्

पंचमांश कुंडली



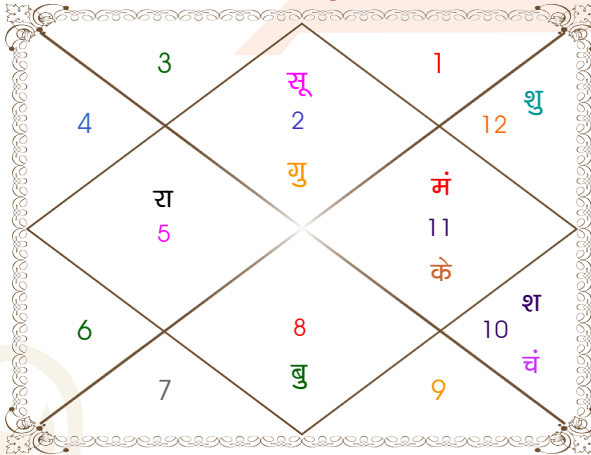
भाग्यविचारः

षष्ठांश कुंडली



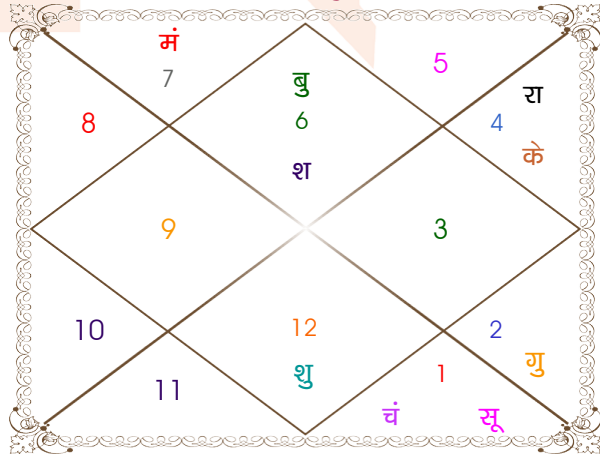
ज्ञानविचारः

सप्तमांश कुंडली



रिपुज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

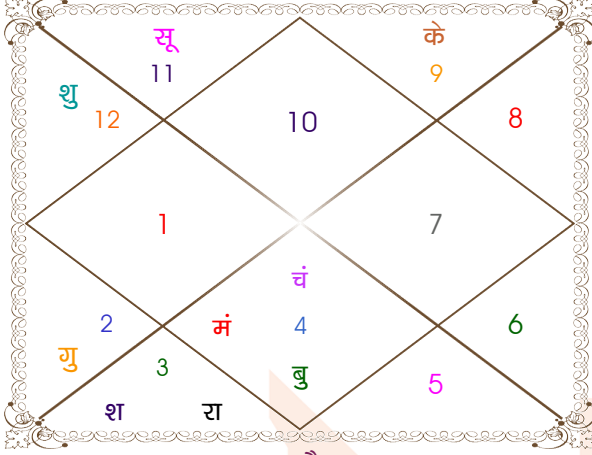


पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

आयुविचारः

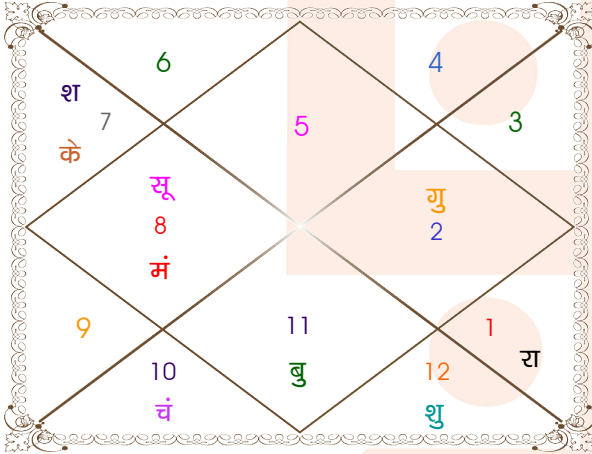
# षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



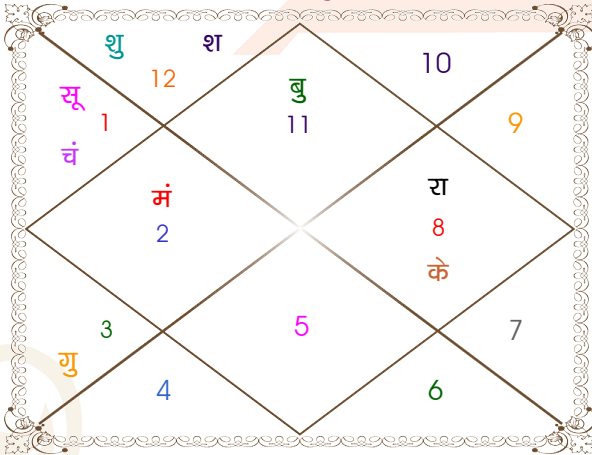
कलत्र सौख्यम

एकादशांश कुंडली



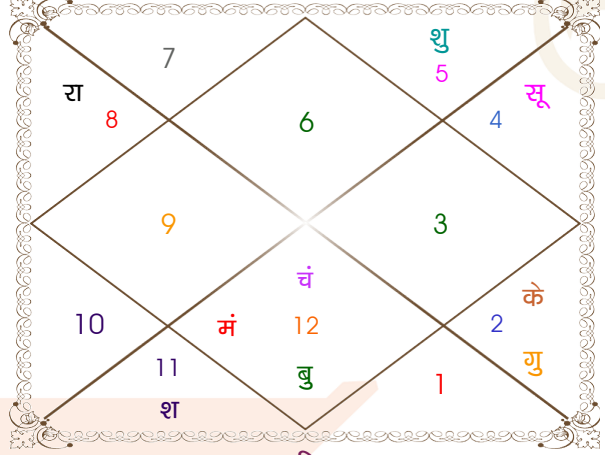
लाभविचारः

षोडशांश कुंडली



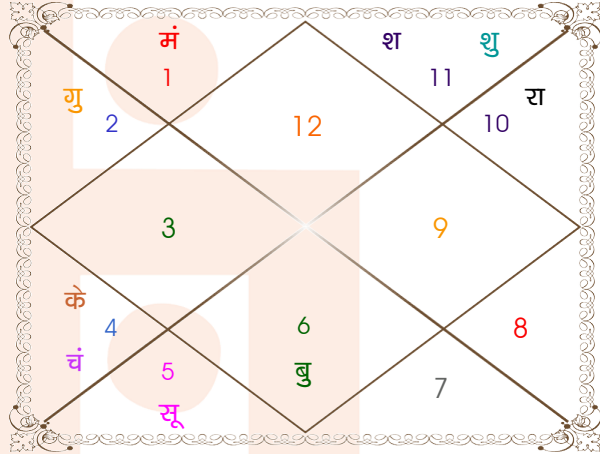
वाहनसुखविचारः

दशमांश कुंडली



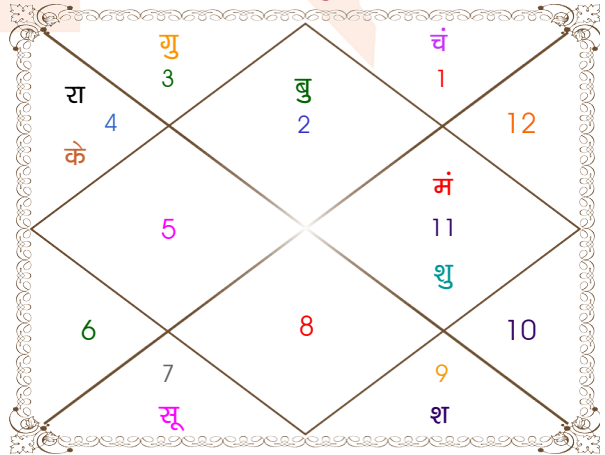
राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली



पितृसौख्यम

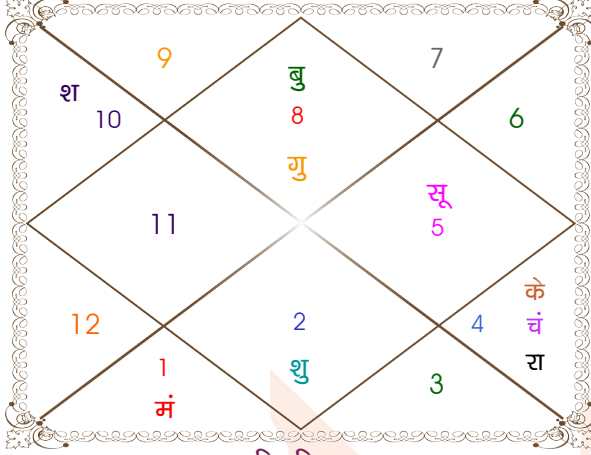
विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

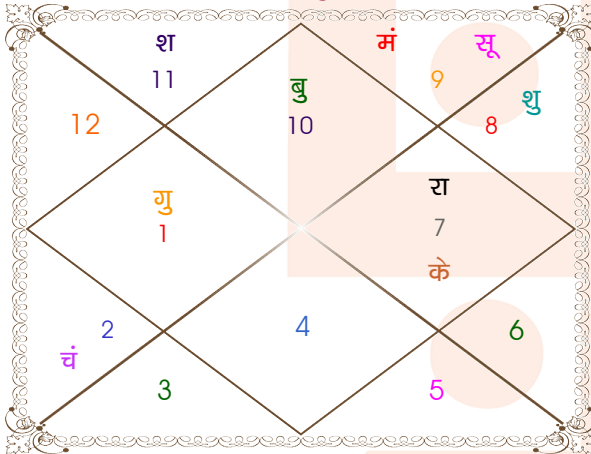
# षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशंश कुंडली



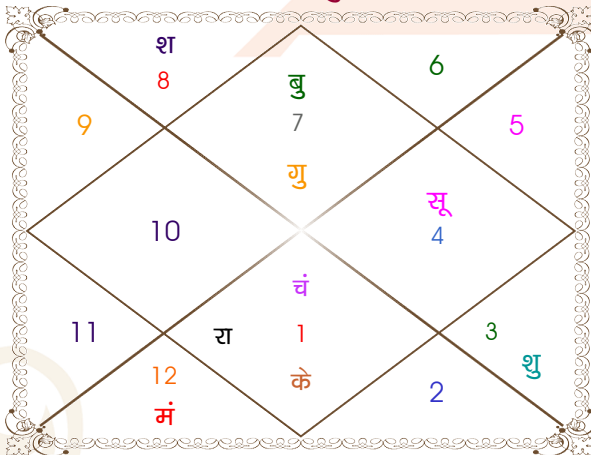
विद्याविचारः

त्रिंशंश कुंडली



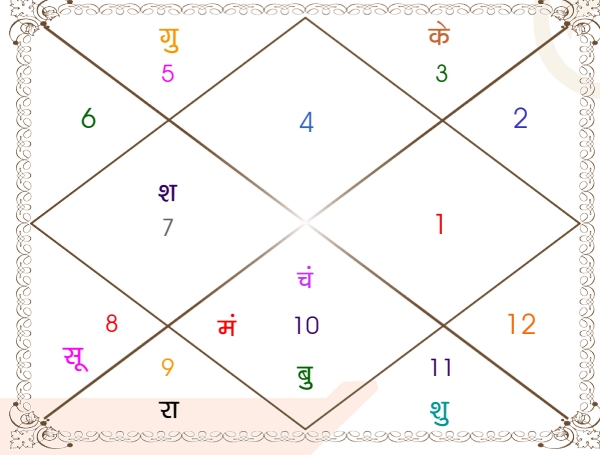
अरिष्टज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



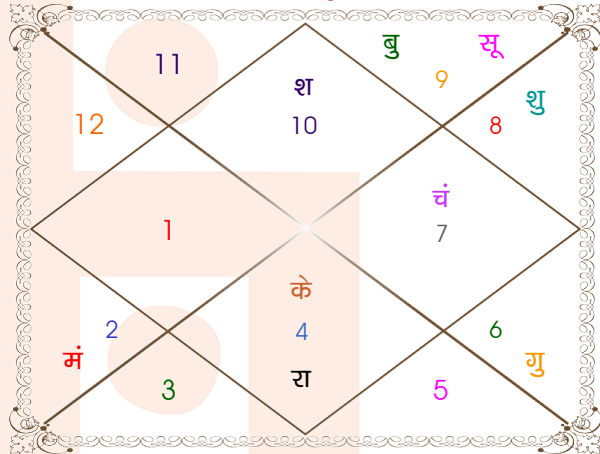
सर्वास्थितिविचारः

सप्तविंशंश कुंडली



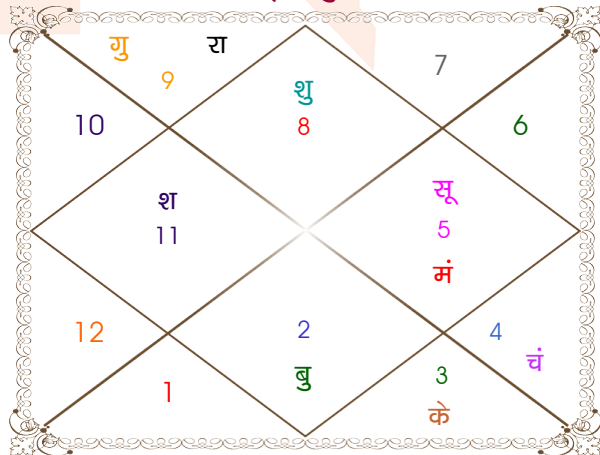
बलाबलज्ञानम्

खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

## मैत्री सारिणी

### नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

### तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

### पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

## षट्बल तथा भावबल सारिणी

### षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	42	41	44	18	30	60	44
सप्तवर्गज बल	98	158	109	129	68	105	128
ओजयुग्मक बल	30	30	15	0	15	30	30
केन्द्र बल	30	60	15	60	60	15	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	15	15	0
कुल स्थान बल	199	288	183	208	187	225	217
कुल दिग्बल	39	24	17	0	25	7	46
नतोन्नत बल	40	20	20	60	40	40	20
पक्ष बल	15	90	15	45	45	45	15
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	39	3	0	52	44	41	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	139	112	50	217	189	127	185
कुल चेष्टाबल	0	0	26	40	18	32	24
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-13	-2	25	12	-12	-13	24
कुल षट्बल	425	473	318	502	442	419	503
रूप षट्बल	7.1	7.9	5.3	8.4	7.4	7.0	8.4
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.3	1.1	1.2	1.1	1.3	1.7
संबंधित पद	2	3	7	5	6	4	1

### इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	31.03	42.89	33.70	26.93	23.26	43.42	32.33
कष्ट फल	25.94	16.96	23.32	29.13	35.55	3.67	23.97

### भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	473	425	502	419	318	442	503	503	442	318	419	502
भावदिग्बल	30	20	40	30	40	20	30	10	10	60	50	50
भावदृष्टि बल	80	68	51	84	47	67	18	-15	-5	30	20	6
कुल भाव बल	583	513	593	533	404	529	551	498	447	407	489	558
रूप भाव बल	9.7	8.5	9.9	8.9	6.7	8.8	9.2	8.3	7.5	6.8	8.1	9.3
संबंधित पद	2	7	1	5	12	6	4	8	10	11	9	3

## अष्टकवर्ग सारिणी

### सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	शु	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	5	1	1	4	6	4	3	4	1	5	2	39
गुरु	6	6	3	4	4	3	5	7	4	6	4	4	56
मंगल	2	3	4	4	2	5	3	2	5	3	2	4	39
सूर्य	2	4	4	2	5	8	5	2	7	2	3	4	48
शुक्र	2	5	3	4	5	5	5	6	3	3	5	6	52
बुध	3	4	5	5	4	4	7	3	6	5	3	5	54
चंद्र	7	7	1	5	2	5	4	4	4	5	3	2	49
बिन्दु	25	34	21	25	26	36	33	27	33	25	25	27	337
रेखा	31	22	35	31	30	20	23	29	23	31	31	29	335

### त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	शु	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	4	0	0	1	5	3	2	1	0	4	1	21
गुरु	2	3	0	0	0	0	2	3	0	3	1	0	14
मंगल	0	0	2	2	0	2	1	0	3	0	0	2	12
सूर्य	0	2	1	0	3	6	2	0	5	0	0	2	21
शुक्र	0	2	0	0	3	2	2	2	1	0	2	2	16
बुध	0	0	2	2	1	0	4	0	3	1	0	2	15
चंद्र	5	2	0	3	0	0	3	2	2	0	2	0	19
रेखा	7	13	5	7	8	15	17	9	15	4	9	9	118

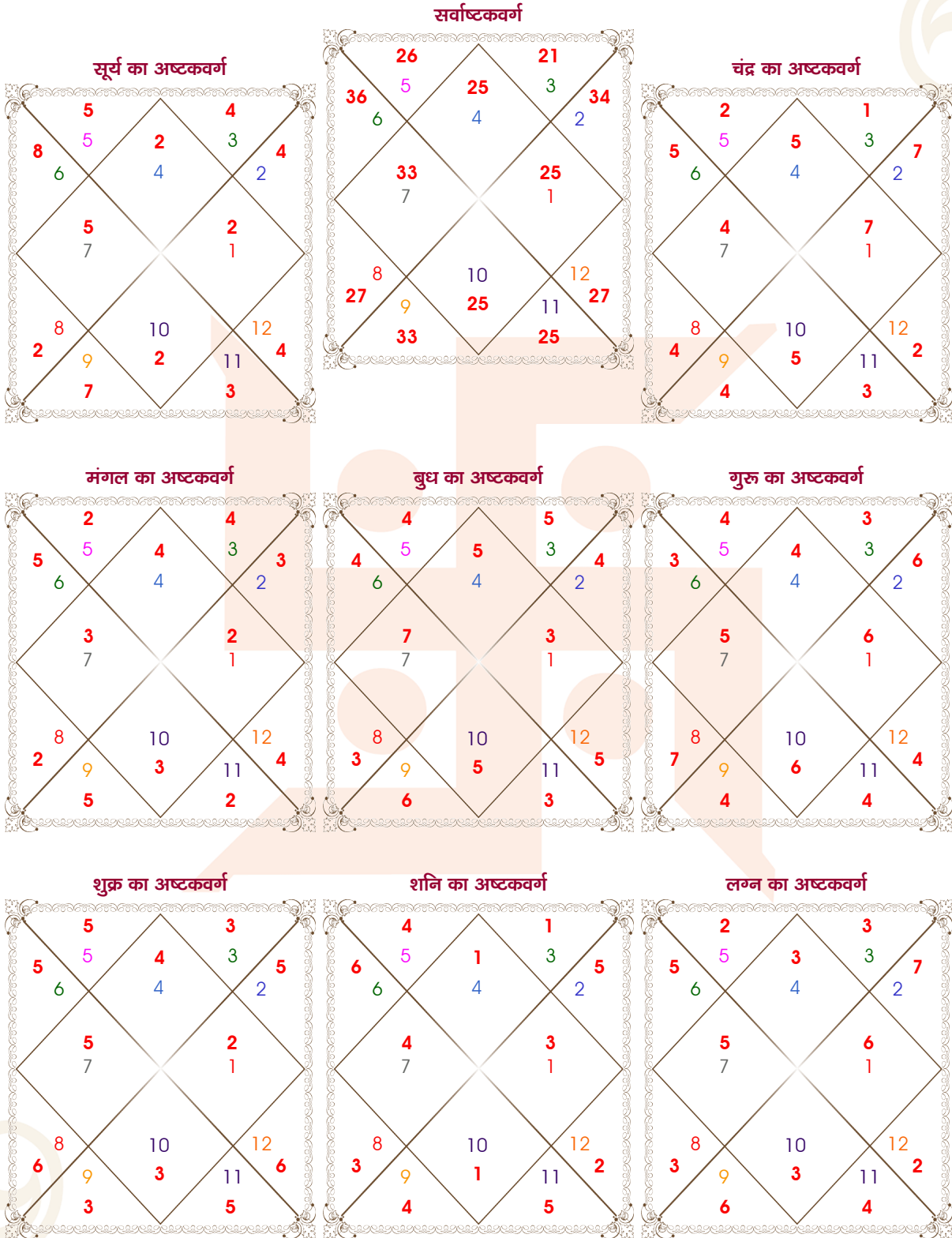
### एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	बु	शु	घ	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	0	1	5	3	2	1	0	4	1	18
गुरु	2	1	0	0	0	0	2	1	0	3	1	0	10
मंगल	0	0	0	2	0	0	1	0	3	0	0	2	8
सूर्य	0	0	1	0	3	5	0	0	5	0	0	2	16
शुक्र	0	0	0	0	3	2	0	2	1	0	2	2	12
बुध	0	0	2	2	1	0	4	0	3	1	0	2	15
चंद्र	5	2	0	3	0	0	1	0	2	0	2	0	15
रेखा	7	4	3	7	8	12	11	5	15	4	9	9	94

### शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	132	114	66	118	72	111	147
ग्रह पिंड	79	101	63	68	40	37	40
शोध्य पिंड	211	215	129	186	112	148	187

# अष्टकवर्ग सारिणी



# दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी या बुरी दशाओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे-बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा-अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्यान्य समस्याओं, पीड़ा जनित कष्ट, बाधा, असफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 3 वर्ष 11 मास 20 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
28/02/1988	19/02/1992	19/02/2011	19/02/2028	19/02/2035
19/02/1992	19/02/2011	19/02/2028	19/02/2035	19/02/2055
00/00/0000	शनि 22/02/1995	बुध 17/07/2013	केतु 17/07/2028	शुक्र 20/06/2038
00/00/0000	बुध 01/11/1997	केतु 14/07/2014	शुक्र 16/09/2029	सूर्य 20/06/2039
00/00/0000	केतु 11/12/1998	शुक्र 14/05/2017	सूर्य 22/01/2030	चंद्र 18/02/2041
00/00/0000	शुक्र 09/02/2002	सूर्य 21/03/2018	चंद्र 23/08/2030	मंगल 20/04/2042
00/00/0000	सूर्य 22/01/2003	चंद्र 20/08/2019	मंगल 19/01/2031	राहु 20/04/2045
28/02/1988	चंद्र 22/08/2004	मंगल 16/08/2020	राहु 07/02/2032	गुरु 20/12/2047
चंद्र 19/10/1988	मंगल 01/10/2005	राहु 06/03/2023	गुरु 12/01/2033	शनि 19/02/2051
मंगल 25/09/1989	राहु 07/08/2008	गुरु 11/06/2025	शनि 21/02/2034	बुध 19/12/2053
राहु 19/02/1992	गुरु 19/02/2011	शनि 19/02/2028	बुध 19/02/2035	केतु 19/02/2055

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
19/02/2055	18/02/2061	19/02/2071	18/02/2078	19/02/2096
18/02/2061	19/02/2071	18/02/2078	19/02/2096	00/00/0000
सूर्य 08/06/2055	चंद्र 19/12/2061	मंगल 18/07/2071	राहु 31/10/2080	गुरु 08/04/2098
चंद्र 08/12/2055	मंगल 20/07/2062	राहु 04/08/2072	गुरु 27/03/2083	शनि 20/10/2100
मंगल 14/04/2056	राहु 19/01/2064	गुरु 11/07/2073	शनि 31/01/2086	बुध 26/01/2103
राहु 08/03/2057	गुरु 20/05/2065	शनि 20/08/2074	बुध 19/08/2088	केतु 02/01/2104
गुरु 25/12/2057	शनि 20/12/2066	बुध 17/08/2075	केतु 07/09/2089	शुक्र 02/09/2106
शनि 07/12/2058	बुध 20/05/2068	केतु 13/01/2076	शुक्र 07/09/2092	सूर्य 21/06/2107
बुध 14/10/2059	केतु 19/12/2068	शुक्र 14/03/2077	सूर्य 01/08/2093	चंद्र 29/02/2108
केतु 19/02/2060	शुक्र 20/08/2070	सूर्य 20/07/2077	चंद्र 31/01/2095	00/00/0000
शुक्र 18/02/2061	सूर्य 19/02/2071	चंद्र 18/02/2078	मंगल 19/02/2096	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 3 वर्ष 11 मा 26 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध
28/02/1988	19/10/1988	25/09/1989	19/02/1992	22/02/1995
19/10/1988	25/09/1989	19/02/1992	22/02/1995	01/11/1997
00/00/0000	मंगल 08/11/1988	राहु 04/02/1990	शनि 11/08/1992	बुध 11/07/1995
00/00/0000	राहु 29/12/1988	गुरु 01/06/1990	बुध 13/01/1993	केतु 06/09/1995
00/00/0000	गुरु 13/02/1989	शनि 17/10/1990	केतु 18/03/1993	शुक्र 17/02/1996
28/02/1988	शनि 08/04/1989	बुध 19/02/1991	शुक्र 18/09/1993	सूर्य 06/04/1996
शनि 30/03/1988	बुध 26/05/1989	केतु 11/04/1991	सूर्य 12/11/1993	चंद्र 27/06/1996
बुध 07/06/1988	केतु 15/06/1989	शुक्र 04/09/1991	चंद्र 11/02/1994	मंगल 23/08/1996
केतु 06/07/1988	शुक्र 11/08/1989	सूर्य 18/10/1991	मंगल 16/04/1994	राहु 18/01/1997
शुक्र 25/09/1988	सूर्य 28/08/1989	चंद्र 30/12/1991	राहु 28/09/1994	गुरु 29/05/1997
सूर्य 19/10/1988	चंद्र 25/09/1989	मंगल 19/02/1992	गुरु 22/02/1995	शनि 01/11/1997
शनि - केतु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र	शनि - मंगल
01/11/1997	11/12/1998	09/02/2002	22/01/2003	22/08/2004
11/12/1998	09/02/2002	22/01/2003	22/08/2004	01/10/2005
केतु 24/11/1997	शुक्र 21/06/1999	सूर्य 26/02/2002	चंद्र 11/03/2003	मंगल 15/09/2004
शुक्र 31/01/1998	सूर्य 18/08/1999	चंद्र 27/03/2002	मंगल 14/04/2003	राहु 15/11/2004
सूर्य 20/02/1998	चंद्र 22/11/1999	मंगल 17/04/2002	राहु 10/07/2003	गुरु 08/01/2005
चंद्र 26/03/1998	मंगल 29/01/2000	राहु 08/06/2002	गुरु 25/09/2003	शनि 13/03/2005
मंगल 18/04/1998	राहु 20/07/2000	गुरु 24/07/2002	शनि 25/12/2003	बुध 09/05/2005
राहु 18/06/1998	गुरु 22/12/2000	शनि 17/09/2002	बुध 16/03/2004	केतु 02/06/2005
गुरु 11/08/1998	शनि 23/06/2001	बुध 05/11/2002	केतु 19/04/2004	शुक्र 08/08/2005
शनि 14/10/1998	बुध 04/12/2001	केतु 25/11/2002	शुक्र 25/07/2004	सूर्य 29/08/2005
बुध 11/12/1998	केतु 09/02/2002	शुक्र 22/01/2003	सूर्य 22/08/2004	चंद्र 01/10/2005
शनि - राहु	शनि - गुरु	बुध - बुध	बुध - केतु	बुध - शुक्र
01/10/2005	07/08/2008	19/02/2011	17/07/2013	14/07/2014
07/08/2008	19/02/2011	17/07/2013	14/07/2014	14/05/2017
राहु 06/03/2006	गुरु 09/12/2008	बुध 23/06/2011	केतु 07/08/2013	शुक्र 03/01/2015
गुरु 23/07/2006	शनि 04/05/2009	केतु 13/08/2011	शुक्र 07/10/2013	सूर्य 24/02/2015
शनि 04/01/2007	बुध 12/09/2009	शुक्र 07/01/2012	सूर्य 25/10/2013	चंद्र 21/05/2015
बुध 31/05/2007	केतु 05/11/2009	सूर्य 20/02/2012	चंद्र 24/11/2013	मंगल 20/07/2015
केतु 31/07/2007	शुक्र 08/04/2010	चंद्र 03/05/2012	मंगल 15/12/2013	राहु 22/12/2015
शुक्र 21/01/2008	सूर्य 25/05/2010	मंगल 24/06/2012	राहु 07/02/2014	गुरु 08/05/2016
सूर्य 13/03/2008	चंद्र 10/08/2010	राहु 03/11/2012	गुरु 28/03/2014	शनि 19/10/2016
चंद्र 07/06/2008	मंगल 03/10/2010	गुरु 28/02/2013	शनि 24/05/2014	बुध 15/03/2017
मंगल 07/08/2008	राहु 19/02/2011	शनि 17/07/2013	बुध 14/07/2014	केतु 14/05/2017

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु	बुध - गुरु
14/05/2017	21/03/2018	20/08/2019	16/08/2020	06/03/2023
21/03/2018	20/08/2019	16/08/2020	06/03/2023	11/06/2025
सूर्य 30/05/2017	चंद्र 03/05/2018	मंगल 10/09/2019	राहु 03/01/2021	गुरु 24/06/2023
चंद्र 25/06/2017	मंगल 02/06/2018	राहु 04/11/2019	गुरु 07/05/2021	शनि 02/11/2023
मंगल 13/07/2017	राहु 19/08/2018	गुरु 22/12/2019	शनि 02/10/2021	बुध 27/02/2024
राहु 28/08/2017	गुरु 27/10/2018	शनि 17/02/2020	बुध 11/02/2022	केतु 16/04/2024
गुरु 09/10/2017	शनि 17/01/2019	बुध 09/04/2020	केतु 06/04/2022	शुक्र 01/09/2024
शनि 27/11/2017	बुध 31/03/2019	केतु 30/04/2020	शुक्र 08/09/2022	सूर्य 12/10/2024
बुध 10/01/2018	केतु 30/04/2019	शुक्र 29/06/2020	सूर्य 25/10/2022	चंद्र 20/12/2024
केतु 28/01/2018	शुक्र 25/07/2019	सूर्य 17/07/2020	चंद्र 10/01/2023	मंगल 06/02/2025
शुक्र 21/03/2018	सूर्य 20/08/2019	चंद्र 16/08/2020	मंगल 06/03/2023	राहु 11/06/2025
बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र
11/06/2025	19/02/2028	17/07/2028	16/09/2029	22/01/2030
19/02/2028	17/07/2028	16/09/2029	22/01/2030	23/08/2030
शनि 13/11/2025	केतु 27/02/2028	शुक्र 26/09/2028	सूर्य 22/09/2029	चंद्र 09/02/2030
बुध 02/04/2026	शुक्र 23/03/2028	सूर्य 17/10/2028	चंद्र 03/10/2029	मंगल 21/02/2030
केतु 29/05/2026	सूर्य 31/03/2028	चंद्र 22/11/2028	मंगल 11/10/2029	राहु 25/03/2030
शुक्र 09/11/2026	चंद्र 12/04/2028	मंगल 17/12/2028	राहु 30/10/2029	गुरु 22/04/2030
सूर्य 28/12/2026	मंगल 21/04/2028	राहु 19/02/2029	गुरु 16/11/2029	शनि 26/05/2030
चंद्र 20/03/2027	राहु 13/05/2028	गुरु 16/04/2029	शनि 06/12/2029	बुध 25/06/2030
मंगल 16/05/2027	गुरु 02/06/2028	शनि 23/06/2029	बुध 24/12/2029	केतु 08/07/2030
राहु 11/10/2027	शनि 26/06/2028	बुध 22/08/2029	केतु 01/01/2030	शुक्र 12/08/2030
गुरु 19/02/2028	बुध 17/07/2028	केतु 16/09/2029	शुक्र 22/01/2030	सूर्य 23/08/2030
केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध
23/08/2030	19/01/2031	07/02/2032	12/01/2033	21/02/2034
19/01/2031	07/02/2032	12/01/2033	21/02/2034	19/02/2035
मंगल 01/09/2030	राहु 18/03/2031	गुरु 23/03/2032	शनि 18/03/2033	बुध 14/04/2034
राहु 23/09/2030	गुरु 08/05/2031	शनि 16/05/2032	बुध 14/05/2033	केतु 05/05/2034
गुरु 13/10/2030	शनि 07/07/2031	बुध 03/07/2032	केतु 07/06/2033	शुक्र 04/07/2034
शनि 06/11/2030	बुध 31/08/2031	केतु 23/07/2032	शुक्र 13/08/2033	सूर्य 22/07/2034
बुध 27/11/2030	केतु 22/09/2031	शुक्र 18/09/2032	सूर्य 02/09/2033	चंद्र 21/08/2034
केतु 05/12/2030	शुक्र 25/11/2031	सूर्य 05/10/2032	चंद्र 06/10/2033	मंगल 12/09/2034
शुक्र 30/12/2030	सूर्य 14/12/2031	चंद्र 02/11/2032	मंगल 30/10/2033	राहु 05/11/2034
सूर्य 07/01/2031	चंद्र 15/01/2032	मंगल 22/11/2032	राहु 29/12/2033	गुरु 23/12/2034
चंद्र 19/01/2031	मंगल 07/02/2032	राहु 12/01/2033	गुरु 21/02/2034	शनि 19/02/2035

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु
19/02/2035	20/06/2038	20/06/2039	18/02/2041	20/04/2042
20/06/2038	20/06/2039	18/02/2041	20/04/2042	20/04/2045
शुक्र 09/09/2035	सूर्य 08/07/2038	चंद्र 10/08/2039	मंगल 15/03/2041	राहु 02/10/2042
सूर्य 09/11/2035	चंद्र 08/08/2038	मंगल 15/09/2039	राहु 18/05/2041	गुरु 25/02/2043
चंद्र 19/02/2036	मंगल 29/08/2038	राहु 15/12/2039	गुरु 14/07/2041	शनि 17/08/2043
मंगल 30/04/2036	राहु 23/10/2038	गुरु 05/03/2040	शनि 19/09/2041	बुध 19/01/2044
राहु 29/10/2036	गुरु 11/12/2038	शनि 09/06/2040	बुध 18/11/2041	केतु 23/03/2044
गुरु 10/04/2037	शनि 06/02/2039	बुध 04/09/2040	केतु 13/12/2041	शुक्र 22/09/2044
शनि 20/10/2037	बुध 30/03/2039	केतु 09/10/2040	शुक्र 22/02/2042	सूर्य 16/11/2044
बुध 10/04/2038	केतु 20/04/2039	शुक्र 19/01/2041	सूर्य 16/03/2042	चंद्र 15/02/2045
केतु 20/06/2038	शुक्र 20/06/2039	सूर्य 18/02/2041	चंद्र 20/04/2042	मंगल 20/04/2045
शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु	सूर्य - सूर्य
20/04/2045	20/12/2047	19/02/2051	19/12/2053	19/02/2055
20/12/2047	19/02/2051	19/12/2053	19/02/2055	08/06/2055
गुरु 28/08/2045	शनि 20/06/2048	बुध 15/07/2051	केतु 13/01/2054	सूर्य 24/02/2055
शनि 29/01/2046	बुध 01/12/2048	केतु 13/09/2051	शुक्र 25/03/2054	चंद्र 05/03/2055
बुध 16/06/2046	केतु 06/02/2049	शुक्र 04/03/2052	सूर्य 16/04/2054	मंगल 12/03/2055
केतु 12/08/2046	शुक्र 18/08/2049	सूर्य 25/04/2052	चंद्र 21/05/2054	राहु 28/03/2055
शुक्र 21/01/2047	सूर्य 15/10/2049	चंद्र 20/07/2052	मंगल 15/06/2054	गुरु 12/04/2055
सूर्य 11/03/2047	चंद्र 19/01/2050	मंगल 18/09/2052	राहु 18/08/2054	शनि 29/04/2055
चंद्र 31/05/2047	मंगल 28/03/2050	राहु 21/02/2053	गुरु 14/10/2054	बुध 14/05/2055
मंगल 27/07/2047	राहु 17/09/2050	गुरु 09/07/2053	शनि 20/12/2054	केतु 21/05/2055
राहु 20/12/2047	गुरु 19/02/2051	शनि 19/12/2053	बुध 19/02/2055	शुक्र 08/06/2055
सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु	सूर्य - शनि
08/06/2055	08/12/2055	14/04/2056	08/03/2057	25/12/2057
08/12/2055	14/04/2056	08/03/2057	25/12/2057	07/12/2058
चंद्र 23/06/2055	मंगल 15/12/2055	राहु 02/06/2056	गुरु 16/04/2057	शनि 18/02/2058
मंगल 04/07/2055	राहु 03/01/2056	गुरु 16/07/2056	शनि 02/06/2057	बुध 09/04/2058
राहु 31/07/2055	गुरु 20/01/2056	शनि 06/09/2056	बुध 13/07/2057	केतु 29/04/2058
गुरु 25/08/2055	शनि 10/02/2056	बुध 22/10/2056	केतु 30/07/2057	शुक्र 26/06/2058
शनि 23/09/2055	बुध 28/02/2056	केतु 10/11/2056	शुक्र 17/09/2057	सूर्य 13/07/2058
बुध 18/10/2055	केतु 06/03/2056	शुक्र 04/01/2057	सूर्य 01/10/2057	चंद्र 11/08/2058
केतु 29/10/2055	शुक्र 28/03/2056	सूर्य 21/01/2057	चंद्र 26/10/2057	मंगल 31/08/2058
शुक्र 29/11/2055	सूर्य 03/04/2056	चंद्र 17/02/2057	मंगल 12/11/2057	राहु 22/10/2058
सूर्य 08/12/2055	चंद्र 14/04/2056	मंगल 08/03/2057	राहु 25/12/2057	गुरु 07/12/2058

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध	सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल
07/12/2058	14/10/2059	19/02/2060	18/02/2061	19/12/2061
14/10/2059	19/02/2060	18/02/2061	19/12/2061	20/07/2062
बुध 20/01/2059	केतु 21/10/2059	शुक्र 20/04/2060	चंद्र 15/03/2061	मंगल 01/01/2062
केतु 08/02/2059	शुक्र 12/11/2059	सूर्य 08/05/2060	मंगल 02/04/2061	राहु 02/02/2062
शुक्र 31/03/2059	सूर्य 18/11/2059	चंद्र 07/06/2060	राहु 18/05/2061	गुरु 02/03/2062
सूर्य 16/04/2059	चंद्र 29/11/2059	मंगल 29/06/2060	गुरु 27/06/2061	शनि 05/04/2062
चंद्र 12/05/2059	मंगल 06/12/2059	राहु 22/08/2060	शनि 15/08/2061	बुध 05/05/2062
मंगल 30/05/2059	राहु 25/12/2059	गुरु 10/10/2060	बुध 27/09/2061	केतु 18/05/2062
राहु 15/07/2059	गुरु 11/01/2060	शनि 07/12/2060	केतु 14/10/2061	शुक्र 22/06/2062
गुरु 26/08/2059	शनि 01/02/2060	बुध 28/01/2061	शुक्र 04/12/2061	सूर्य 03/07/2062
शनि 14/10/2059	बुध 19/02/2060	केतु 18/02/2061	सूर्य 19/12/2061	चंद्र 20/07/2062
चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु
20/07/2062	19/01/2064	20/05/2065	20/12/2066	20/05/2068
19/01/2064	20/05/2065	20/12/2066	20/05/2068	19/12/2068
राहु 11/10/2062	गुरु 24/03/2064	शनि 20/08/2065	बुध 03/03/2067	केतु 02/06/2068
गुरु 23/12/2062	शनि 09/06/2064	बुध 10/11/2065	केतु 02/04/2067	शुक्र 07/07/2068
शनि 19/03/2063	बुध 17/08/2064	केतु 14/12/2065	शुक्र 27/06/2067	सूर्य 18/07/2068
बुध 05/06/2063	केतु 15/09/2064	शुक्र 20/03/2066	सूर्य 23/07/2067	चंद्र 04/08/2068
केतु 07/07/2063	शुक्र 05/12/2064	सूर्य 18/04/2066	चंद्र 04/09/2067	मंगल 17/08/2068
शुक्र 06/10/2063	सूर्य 29/12/2064	चंद्र 05/06/2066	मंगल 05/10/2067	राहु 18/09/2068
सूर्य 03/11/2063	चंद्र 08/02/2065	मंगल 09/07/2066	राहु 21/12/2067	गुरु 16/10/2068
चंद्र 18/12/2063	मंगल 08/03/2065	राहु 04/10/2066	गुरु 28/02/2068	शनि 19/11/2068
मंगल 19/01/2064	राहु 20/05/2065	गुरु 20/12/2066	शनि 20/05/2068	बुध 19/12/2068
चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु
19/12/2068	20/08/2070	19/02/2071	18/07/2071	04/08/2072
20/08/2070	19/02/2071	18/07/2071	04/08/2072	11/07/2073
शुक्र 31/03/2069	सूर्य 29/08/2070	मंगल 27/02/2071	राहु 13/09/2071	गुरु 19/09/2072
सूर्य 30/04/2069	चंद्र 13/09/2070	राहु 22/03/2071	गुरु 03/11/2071	शनि 12/11/2072
चंद्र 20/06/2069	मंगल 24/09/2070	गुरु 10/04/2071	शनि 03/01/2072	बुध 30/12/2072
मंगल 25/07/2069	राहु 21/10/2070	शनि 04/05/2071	बुध 26/02/2072	केतु 19/01/2073
राहु 25/10/2069	गुरु 15/11/2070	बुध 25/05/2071	केतु 20/03/2072	शुक्र 17/03/2073
गुरु 14/01/2070	शनि 14/12/2070	केतु 03/06/2071	शुक्र 23/05/2072	सूर्य 03/04/2073
शनि 20/04/2070	बुध 08/01/2071	शुक्र 28/06/2071	सूर्य 11/06/2072	चंद्र 01/05/2073
बुध 15/07/2070	केतु 19/01/2071	सूर्य 05/07/2071	चंद्र 13/07/2072	मंगल 21/05/2073
केतु 20/08/2070	शुक्र 19/02/2071	चंद्र 18/07/2071	मंगल 04/08/2072	राहु 11/07/2073

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>मंगल - शनि</b> 11/07/2073 20/08/2074	<b>मंगल - बुध</b> 20/08/2074 17/08/2075	<b>मंगल - केतु</b> 17/08/2075 13/01/2076	<b>मंगल - शुक्र</b> 13/01/2076 14/03/2077	<b>मंगल - सूर्य</b> 14/03/2077 20/07/2077
शनि 13/09/2073 बुध 10/11/2073 केतु 03/12/2073 शुक्र 09/02/2074 सूर्य 01/03/2074 चंद्र 04/04/2074 मंगल 27/04/2074 राहु 27/06/2074 गुरु 20/08/2074	बुध 10/10/2074 केतु 31/10/2074 शुक्र 31/12/2074 सूर्य 18/01/2075 चंद्र 17/02/2075 मंगल 10/03/2075 राहु 03/05/2075 गुरु 21/06/2075 शनि 17/08/2075	केतु 26/08/2075 शुक्र 20/09/2075 सूर्य 27/09/2075 चंद्र 10/10/2075 मंगल 18/10/2075 राहु 10/11/2075 गुरु 29/11/2075 शनि 23/12/2075 बुध 13/01/2076	शुक्र 24/03/2076 सूर्य 15/04/2076 चंद्र 20/05/2076 मंगल 14/06/2076 राहु 17/08/2076 गुरु 13/10/2076 शनि 19/12/2076 बुध 18/02/2077 केतु 14/03/2077	सूर्य 21/03/2077 चंद्र 31/03/2077 मंगल 08/04/2077 राहु 27/04/2077 गुरु 14/05/2077 शनि 03/06/2077 बुध 21/06/2077 केतु 29/06/2077 शुक्र 20/07/2077
<b>मंगल - चंद्र</b> 20/07/2077 18/02/2078	<b>राहु - राहु</b> 18/02/2078 31/10/2080	<b>राहु - गुरु</b> 31/10/2080 27/03/2083	<b>राहु - शनि</b> 27/03/2083 31/01/2086	<b>राहु - बुध</b> 31/01/2086 19/08/2088
चंद्र 07/08/2077 मंगल 19/08/2077 राहु 20/09/2077 गुरु 19/10/2077 शनि 21/11/2077 बुध 22/12/2077 केतु 03/01/2078 शुक्र 08/02/2078 सूर्य 18/02/2078	राहु 16/07/2078 गुरु 25/11/2078 शनि 30/04/2079 बुध 17/09/2079 केतु 13/11/2079 शुक्र 25/04/2080 सूर्य 14/06/2080 चंद्र 04/09/2080 मंगल 31/10/2080	गुरु 25/02/2081 शनि 14/07/2081 बुध 15/11/2081 केतु 05/01/2082 शुक्र 01/06/2082 सूर्य 14/07/2082 चंद्र 25/09/2082 मंगल 16/11/2082 राहु 27/03/2083	शनि 08/09/2083 बुध 02/02/2084 केतु 03/04/2084 शुक्र 24/09/2084 सूर्य 15/11/2084 चंद्र 09/02/2085 मंगल 11/04/2085 राहु 14/09/2085 गुरु 31/01/2086	बुध 12/06/2086 केतु 05/08/2086 शुक्र 08/01/2087 सूर्य 23/02/2087 चंद्र 12/05/2087 मंगल 05/07/2087 राहु 22/11/2087 गुरु 25/03/2088 शनि 19/08/2088
<b>राहु - केतु</b> 19/08/2088 07/09/2089	<b>राहु - शुक्र</b> 07/09/2089 07/09/2092	<b>राहु - सूर्य</b> 07/09/2092 01/08/2093	<b>राहु - चंद्र</b> 01/08/2093 31/01/2095	<b>राहु - मंगल</b> 31/01/2095 19/02/2096
केतु 11/09/2088 शुक्र 14/11/2088 सूर्य 03/12/2088 चंद्र 04/01/2089 मंगल 26/01/2089 राहु 25/03/2089 गुरु 15/05/2089 शनि 15/07/2089 बुध 07/09/2089	शुक्र 09/03/2090 सूर्य 02/05/2090 चंद्र 02/08/2090 मंगल 05/10/2090 राहु 18/03/2091 गुरु 11/08/2091 शनि 01/02/2092 बुध 05/07/2092 केतु 07/09/2092	सूर्य 23/09/2092 चंद्र 20/10/2092 मंगल 09/11/2092 राहु 28/12/2092 गुरु 10/02/2093 शनि 03/04/2093 बुध 19/05/2093 केतु 08/06/2093 शुक्र 01/08/2093	चंद्र 16/09/2093 मंगल 18/10/2093 राहु 08/01/2094 गुरु 22/03/2094 शनि 17/06/2094 बुध 03/09/2094 केतु 05/10/2094 शुक्र 04/01/2095 सूर्य 31/01/2095	मंगल 23/02/2095 राहु 21/04/2095 गुरु 11/06/2095 शनि 11/08/2095 बुध 04/10/2095 केतु 27/10/2095 शुक्र 30/12/2095 सूर्य 18/01/2096 चंद्र 19/02/2096

## योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : पिंगला 0 वर्ष 5 मास 29 दिन

पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
28/02/1988	28/08/1988	28/08/1991	28/08/1995	28/08/2000
28/08/1988	28/08/1991	28/08/1995	28/08/2000	28/08/2006
00/00/0000	धांय 27/11/1988	भाम 07/02/1992	भद्रि 08/05/1996	उल्क 28/08/2001
00/00/0000	भाम 29/03/1989	भद्रि 28/08/1992	उल्क 08/03/1997	सिद्ध 28/10/2002
00/00/0000	भद्रि 28/08/1989	उल्क 28/04/1993	सिद्ध 27/02/1998	संक 27/02/2004
00/00/0000	उल्क 27/02/1990	सिद्ध 06/02/1994	संक 08/04/1999	मंग 28/04/2004
00/00/0000	सिद्ध 28/09/1990	संक 28/12/1994	मंग 29/05/1999	पिंग 28/08/2004
28/02/1988	संक 29/05/1991	मंग 06/02/1995	पिंग 08/09/1999	धांय 26/02/2005
संक 07/08/1988	मंग 29/06/1991	पिंग 29/04/1995	धांय 07/02/2000	भाम 28/10/2005
मंग 28/08/1988	पिंग 28/08/1991	धांय 28/08/1995	भाम 28/08/2000	भद्रि 28/08/2006
सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
28/08/2006	28/08/2013	28/08/2021	28/08/2022	28/08/2024
28/08/2013	28/08/2021	28/08/2022	28/08/2024	28/08/2027
सिद्ध 07/01/2008	संक 08/06/2015	मंग 07/09/2021	पिंग 08/10/2022	धांय 27/11/2024
संक 28/07/2009	मंग 28/08/2015	पिंग 27/09/2021	धांय 08/12/2022	भाम 29/03/2025
मंग 07/10/2009	पिंग 07/02/2016	धांय 28/10/2021	भाम 27/02/2023	भद्रि 28/08/2025
पिंग 27/02/2010	धांय 07/10/2016	भाम 07/12/2021	भद्रि 08/06/2023	उल्क 27/02/2026
धांय 28/09/2010	भाम 28/08/2017	भद्रि 27/01/2022	उल्क 08/10/2023	सिद्ध 28/09/2026
भाम 09/07/2011	भद्रि 08/10/2018	उल्क 29/03/2022	सिद्ध 27/02/2024	संक 29/05/2027
भद्रि 28/06/2012	उल्क 07/02/2020	सिद्ध 08/06/2022	संक 07/08/2024	मंग 29/06/2027
उल्क 28/08/2013	सिद्ध 28/08/2021	संक 28/08/2022	मंग 28/08/2024	पिंग 28/08/2027

नोट :- योगिनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।  
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## योगिनी दशा

<b>भामरी 4 वर्ष</b>	<b>भद्रिका 5 वर्ष</b>	<b>उल्का 6 वर्ष</b>	<b>सिद्धा 7 वर्ष</b>	<b>संकटा 8 वर्ष</b>
<b>28/08/2027</b>	<b>28/08/2031</b>	<b>28/08/2036</b>	<b>28/08/2042</b>	<b>28/08/2049</b>
<b>28/08/2031</b>	<b>28/08/2036</b>	<b>28/08/2042</b>	<b>28/08/2049</b>	<b>28/08/2057</b>
भाम 07/02/2028	भद्रि 08/05/2032	उल्क 28/08/2037	सिद्ध 07/01/2044	संक 08/06/2051
भद्रि 28/08/2028	उल्क 08/03/2033	सिद्ध 28/10/2038	संक 28/07/2045	मंग 28/08/2051
उल्क 28/04/2029	सिद्ध 27/02/2034	संक 27/02/2040	मंग 07/10/2045	पिंग 07/02/2052
सिद्ध 06/02/2030	संक 08/04/2035	मंग 28/04/2040	पिंग 27/02/2046	धांय 07/10/2052
संक 28/12/2030	मंग 29/05/2035	पिंग 28/08/2040	धांय 28/09/2046	भाम 28/08/2053
मंग 06/02/2031	पिंग 08/09/2035	धांय 26/02/2041	भाम 09/07/2047	भद्रि 08/10/2054
पिंग 29/04/2031	धांय 07/02/2036	भाम 28/10/2041	भद्रि 28/06/2048	उल्क 07/02/2056
धांय 28/08/2031	भाम 28/08/2036	भद्रि 28/08/2042	उल्क 28/08/2049	सिद्ध 28/08/2057
<b>मंगला 1 वर्ष</b>	<b>पिंगला 2 वर्ष</b>	<b>धान्या 3 वर्ष</b>	<b>भामरी 4 वर्ष</b>	<b>भद्रिका 5 वर्ष</b>
<b>28/08/2057</b>	<b>28/08/2058</b>	<b>28/08/2060</b>	<b>28/08/2063</b>	<b>28/08/2067</b>
<b>28/08/2058</b>	<b>28/08/2060</b>	<b>28/08/2063</b>	<b>28/08/2067</b>	<b>28/08/2072</b>
मंग 07/09/2057	पिंग 08/10/2058	धांय 27/11/2060	भाम 07/02/2064	भद्रि 08/05/2068
पिंग 27/09/2057	धांय 08/12/2058	भाम 29/03/2061	भद्रि 28/08/2064	उल्क 08/03/2069
धांय 28/10/2057	भाम 27/02/2059	भद्रि 28/08/2061	उल्क 28/04/2065	सिद्ध 27/02/2070
भाम 07/12/2057	भद्रि 08/06/2059	उल्क 27/02/2062	सिद्ध 06/02/2066	संक 08/04/2071
भद्रि 27/01/2058	उल्क 08/10/2059	सिद्ध 28/09/2062	संक 28/12/2066	मंग 29/05/2071
उल्क 29/03/2058	सिद्ध 27/02/2060	संक 29/05/2063	मंग 06/02/2067	पिंग 08/09/2071
सिद्ध 08/06/2058	संक 07/08/2060	मंग 29/06/2063	पिंग 29/04/2067	धांय 07/02/2072
संक 28/08/2058	मंग 28/08/2060	पिंग 28/08/2063	धांय 28/08/2067	भाम 28/08/2072
<b>उल्का 6 वर्ष</b>	<b>सिद्धा 7 वर्ष</b>	<b>संकटा 8 वर्ष</b>	<b>मंगला 1 वर्ष</b>	<b>पिंगला 2 वर्ष</b>
<b>28/08/2072</b>	<b>28/08/2078</b>	<b>28/08/2085</b>	<b>28/08/2093</b>	<b>28/08/2094</b>
<b>28/08/2078</b>	<b>28/08/2085</b>	<b>28/08/2093</b>	<b>28/08/2094</b>	<b>00/00/0000</b>
उल्क 28/08/2073	सिद्ध 07/01/2080	संक 08/06/2087	मंग 07/09/2093	पिंग 08/10/2094
सिद्ध 28/10/2074	संक 28/07/2081	मंग 28/08/2087	पिंग 27/09/2093	धांय 08/12/2094
संक 27/02/2076	मंग 07/10/2081	पिंग 07/02/2088	धांय 28/10/2093	भाम 27/02/2095
मंग 28/04/2076	पिंग 27/02/2082	धांय 07/10/2088	भाम 07/12/2093	भद्रि 08/06/2095
पिंग 28/08/2076	धांय 28/09/2082	भाम 28/08/2089	भद्रि 27/01/2094	उल्क 08/10/2095
धांय 26/02/2077	भाम 09/07/2083	भद्रि 08/10/2090	उल्क 29/03/2094	सिद्ध 27/02/2096
भाम 28/10/2077	भद्रि 28/06/2084	उल्क 07/02/2092	सिद्ध 08/06/2094	संक 28/02/2096
भद्रि 28/08/2078	उल्क 28/08/2085	सिद्ध 28/08/2093	संक 28/08/2094	00/00/0000

# उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, ग्रहों के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

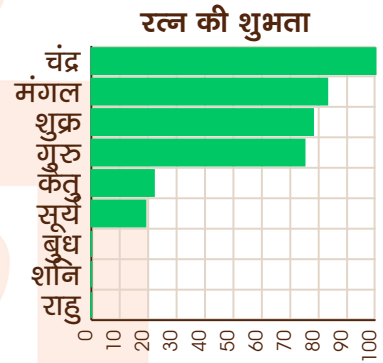
मूलांक	1
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 2
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	100%	स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	83%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	78%	भाग्योदय, धनार्जन, सुख
पुखराज	गुरु	75%	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	22%	धन हानि, दुर्घटना
माणिक्य	सूर्य	19%	दुर्घटना, धन हानि
पन्ना	बुध	0%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
गोमेद	राहु	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	19/02/1992	31%	100%	89%	0%	88%	66%	0%	0%	22%
शनि	19/02/2011	0%	89%	70%	12%	75%	84%	0%	0%	0%
बुध	19/02/2028	31%	89%	83%	25%	75%	84%	0%	0%	22%
केतु	19/02/2035	0%	89%	89%	0%	75%	84%	0%	0%	47%
शुक्र	19/02/2055	0%	89%	83%	12%	75%	91%	0%	0%	34%
सूर्य	18/02/2061	44%	100%	89%	0%	81%	66%	0%	0%	0%
चंद्र	19/02/2071	31%	100%	83%	12%	75%	78%	0%	0%	0%
मंगल	18/02/2078	31%	100%	95%	0%	81%	78%	0%	0%	34%
राहु	19/02/2096	0%	89%	70%	0%	75%	84%	0%	12%	0%

## विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।  
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति

तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

### आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मोती, मूंगा, हीरा व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पुखराज आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा व हीरा रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

लहसुनिया, माणिक्य, पन्ना, नीलम व गोमेद रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

### मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न

आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश चंद्र का रत्न मोती धारण कर आप अपने जीवन को दीर्घकालिन बना सकते हैं। मोती रत्न आपके स्वास्थ्य को अनुकूल, तेज एवं स्फूर्ति दे सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप को प्रयासों में सफलता, यश-सम्मान एवं भावुकता में कमी कर सकता है। रत्न शुभता से आप व्यवहारिक बनेंगे तथा आपका मनोबल उच्च रहेगा। मोती रत्न आपको यशस्वी बनाकर व्यवसाय में सफलता दे सकता है। इसके साथ ही रत्न की शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखी रख सकती है। आपके स्वभाव की अस्थिरता को नियंत्रित करने में भी मोती रत्न अहम भूमिका निभा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूठी में, सोमवार को प्रातःकाल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

### मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल षष्ठ भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपकी सभी इच्छाओं की पूर्ति करेगा। आप क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे और आप तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी होंगे। रत्न प्रभाव से आप अपने विरोधियों को पराजित करेंगे। मूंगा रत्न की शुभता आपमें धैर्य शक्ति का विकास करेगा। नौकरी के क्षेत्र में आपकी नेतृत्व शक्ति का विकास होगा। यह रत्न आपकी विवेकशक्ति में बढ़ोतरी करेगा। व्यवसाय की जगह आप नौकरी करने को अधिक वरीयता देंगे। आप अपने व्यर्थों को नियंत्रित रख पायेंगे।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम भाव एवं दशम भाव के स्वामी तथा मंगल लग्नेश चंद्र के मित्र भी है। यह मंगल योगकारक ग्रह होने के कारण आपके लिए सबसे अधिक शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए अतिउत्तम रत्न है। संतान सुख और शैक्षिक जीवन में अनुकूल सफलता पाने के लिए आपको यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको संतान प्राप्ति के योग, पिता एवं आजीविका क्षेत्र से लाभ दिला सकता है। रत्न की शुभता से आपको भूमि, भवन, दैनिक व्यवसाय, परिश्रम से सम्मान प्राप्ति हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके ग्रहस्थ जीवन को भी सुखमय बनाए रख सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूठी में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के

पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

### हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढ़ने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं आयेश है। शुक्र ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। हीरे की शुभता आपको घर, जमीन-जायदाद, वाहन, प्रतिष्ठा और माता के सुख प्राप्त हो सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। आय, उन्नति, सफलता के अतिरिक्त यह रत्न आपको बड़ी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी, दोस्त एवं उत्तम शुभ चिन्तक दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

## पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु दशम भाव में स्थित है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करना आपके लिए शुभदायक रहेगा। यह रत्न आपको चरित्रवान और स्वतंत्र विचारक बनाएगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको विवेकी, न्यायी और सत्यवादी भी बनाएगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको शास्त्रों का विधिवत ज्ञान होगा। पुखराज रत्न आपको उत्तम वाहनों का सुख देगा। भूमि सुख और भूमि के माध्यम से खूब लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने माता-पिता का अत्यधिक आदर करने वाले बनेंगे। आप खूब धन कमाकर, ऐश्वर्यवान, सुखी और समृद्ध बनेंगे। आप सुंदर वस्त्र और आभूषणों से युक्त होंगे।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में गुरु षष्ठ भाव एवं नवम भाव के स्वामी है। गुरु लग्नेश चंद्र के मित्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए शुभ ग्रह होते हैं। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण कर आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। आप विद्या, बुद्धि व संतान से युक्त हो सकते हैं। आपके कार्यों में जो बाधाएं आती हैं वो रत्न शुभता से दूर हो सकती हैं। छठे भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न रोग, शत्रु तथा ऋणों पर नियन्त्रण बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं पर विजय, भाग्य व धर्म को प्रबलता मिल सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर 8 रत्नी का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

## लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु दूसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करना आपको सरकारी दंड का पात्र बना सकता है। आप कुछ हद तक व्यग्रचित्त हो सकते हैं। भाग्य का साथ आपको समय पर प्राप्त नहीं हो पाएगा। लहसुनिया रत्न आपकी वाणी में व्यंग्य का भाव ला सकता है। आपको मुख रोग परेशान कर सकते हैं। आदर सत्कार का वचन निकालने में अरुचि हो सकती है। रत्न प्रभाव से भाषण सम्भाषण में सरसता का अभाव रहेगा। परिवार में कलह रह सकती है। आर्थिक समस्याएं बीच-बीच में परेशान कर सकती हैं। व्यर्थ के खर्चे बने रहेंगे। राजपक्ष या सरकार से भय रहेगा। पैतृक सम्पत्ति मिलने में व्यवधान आएगा।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

### माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते हैं। हृदय रोग भी यह रत्न आपको दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते हैं। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव के स्वामी है। द्वितीय भाव के स्वामी सूर्य का माणिक्य रत्न धारण आपकी तेजस्विता में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आर्थिक और कौटुम्बिक सम्पन्नता में भी कमी करेगा। रत्न प्रभाव से आपका दांपत्य जीवन असंतोषप्रद हो सकता है। समाज में प्रतिष्ठा प्रभावित हो सकती है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपको नेत्र रोग हो सकते हैं। आपको सगे संबंधियों से विरोध का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपको व्यापार की अपेक्षा नौकरी की ओर आकर्षित कर सकता है। सरकारी क्षेत्रों में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपमें अतिस्वाभिमान और अहंकार भाव दे सकता है।

### पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आप व्यर्थ के वाद-विवाद या लड़ाई झगड़ों में पड़ सकते हैं। यह रत्न व्यावसायिक साझेदार पर आपका विश्वास कम कर सकता है। आपके व्यवहार में शिष्टता का अभाव आ सकता है। पन्ना रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक व्यवहारिक हो सकते हैं। जिसके कारण आपमें संवेदना, दया और सहानुभूति जैसे गुणों की कमी हो सकती है। लेखन, क्रय-विक्रय और व्यापारिक कुशलता प्राप्ति के लिए रत्न की अनुकूलता नहीं बनी हुई है। बुध रत्न पन्ना से आपके जीवन साथी का स्वभाव अव्यवहारिक हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक पक्ष से भी कमजोर कर रहा है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में बुध तीसरे भाव एवं द्वादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बंधु बांधवों का सुख कम प्राप्त हो सकता है। पराक्रम भाव के पक्ष से भी यह रत्न आपके लिए अनुकूल फलदायक नहीं रहेगा। भाई-बहनों से संबंधों की मधुरता में कमी

हो सकती है। बौद्धिक बल से धनार्जन करने में पन्ना रत्न आपको सहयोग नहीं करेगा। व्यावसायिक यात्राओं में असफलता का सामना आपको करना पड़ सकता है। पन्ना रत्न आपके भाग्योदय में बाधक का कार्य कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यय व्यर्थ हो सकते हैं। व्ययों को नियंत्रित रखने में आपको कष्ट हो सकते हैं। विद्या और बौद्धिक विषयों में आपके साथ परेशानियां बनी रहेंगी।

### नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम पहनने से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति को कमजोर कर सकता है। आपकी कम भूख की परेशानी हो सकती है। यह रत्न आपको शत्रुओं से भयभीत रख सकता है। आप प्रतिवादियों से भय खा सकते हैं। बंधु-बंधवों का सुख आपको समय पर न मिल पाए। रत्न प्रभाव आपमें अहंकार भाव ला सकता है। यश, संपत्ति के अधिकारों में कमी हो सकती है। विषय वासनाओं में आप अधिक रत हो सकते हैं। गुणीजनों का अनजाने में आपके द्वारा अनादर हो सकता है। नीलम रत्न धारण से आपके ऋण भुगतान मानसिक चिंता का कारण बन सकते हैं।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तमेश एवं अष्टमेश है। शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके लिए सुख फलदायक नहीं रहेगा। नीलम रत्न आपके भाग्योदय में रुकावट ला सकता है। संतान, जीवन साथी व माता के कष्ट रत्न प्रभाव से बढ़ सकते हैं। यह रत्न आपको पेशाब से संबंधित रोग दे सकता है। शत्रु आपको शारीरिक कष्ट दे सकते हैं। रत्न प्रभाव से आपका मन चंचल रहेगा। मित्रों से मित्रताएं बनती बिगड़ती रहेंगी। यह रत्न आपकी आयु में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य कमजोर होगा। गुप्त रोग भी रत्न प्रभाव से प्रभावी हो सकते हैं। यह रत्न आपकी शारीरिक अस्वस्थता को बढ़ाएगा। कलह और अपयश की स्थिति आपके लिए यह रत्न बना सकता है।

### गोमेद

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद धारण करने पर आपको जन्म स्थान पर रहने के अवसर कम मिल सकते हैं। यह रत्न आपको स्वभाव से जल्दबाज और वाचाल बना सकता है। आपकी सहभागिता ऐसे कार्यों में भी हो सकती है जो धार्मिक व सामाजिक न हो। बातचीत में भाषा की शालीनता का उल्लंघन आपके द्वारा हो सकता है। गोमेद रत्न के कारण वृद्ध अवस्था में आप को सुख की कमी का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से धन हानि के योग भी बन रहे हैं। आपका अधिकांश समय विदेश में व्यतीत हो सकता है।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि छठे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना

पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

### दशानुसार रत्न विचार

बुध

(19/02/2011 - 19/02/2028)

बुध की दशा में आपका मोती, हीरा, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु

(19/02/2028 - 19/02/2035)

केतु की दशा में आपका मोती, मूंगा, हीरा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, पन्ना, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र

(19/02/2035 - 19/02/2055)

शुक्र की दशा में आपका हीरा, मोती, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, माणिक्य, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य

(19/02/2055 - 18/02/2061)

सूर्य की दशा में आपका मोती, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, नीलम, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**चन्द्र**  
**(18/02/2061 - 19/02/2071)**

चन्द्र की दशा में आपका मोती, मूंगा, हीरा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, नीलम, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**मंगल**  
**(19/02/2071 - 18/02/2078)**

मंगल की दशा में आपका मोती, मूंगा, पुखराज व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, नीलम व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**राहु**  
**(18/02/2078 - 19/02/2096)**

राहु की दशा में आपका मोती, हीरा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, माणिक्य, पन्ना, नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त करता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा है। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता है। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव, बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है, और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टों में से थोड़ा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं। फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते हैं, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता है। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यही कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते हैं। जिसमें छठा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं से कष्ट देता है, इसका स्वामी जिस

भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता है। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ठ भाव के स्वामी या इस भाव में स्थित ग्रहों की महादशा- अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव है। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढ़ाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता है। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्ठेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता है। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती हैं, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्टम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता है।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता है।

मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। मंगल का रोग भाव में होने से आपके जीवन साथी से सुखों में न्यूनता, मित्रों से धोखा, संतान सुख में न्यूनता, स्वजनों से झगड़ा, रक्त-विकार, धन-नाश का कारण बन सकता है।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपत्तिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता है।

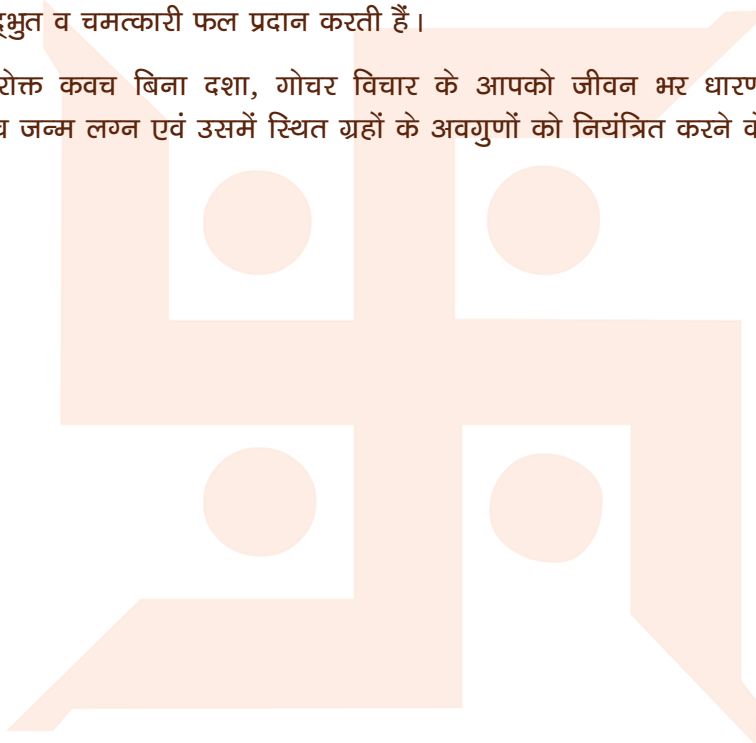
सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा है। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती हैं। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते हैं।

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। आपके पारिवारिक सुखों में कमी, पैतृक

संपति नाश, संघर्ष, सौतेली माता से मतभेद, की स्थिति बन सकती हैं। आप अनुचित तरीकों से लाभार्जन करने का प्रयास कर सकते हैं। धन वृद्धि करने के लिए अनैतिक नियमों का सहारा आप ले सकते हैं। अष्टम भाव में राहु आपके क्रोध भाव में वृद्धि कर रहा है, आप को व्यर्थ विषयों पर बातें करने से बचना चाहिए। कुटुम्बियों से त्याज्य एवं अपमानित, कभी लाभ और कभी हानि, निष्ठुर, कई बार हानि पाने वाला तथा स्वजनों से दूर रहने वाला।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 4, 7, 8 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया  
साढ़ेसाती प्रथम ढैया  
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया  
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

#### फल

सम  
अशुभ  
अशुभ  
अशुभ  
शुभ

#### क्षेत्र

दुर्घटना से बचाव  
कम खर्च  
बुरा स्वास्थ्य  
धन  
सुख

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। यह भाव शत्रु रोग तथा ऋण आदि का प्रतिनिधित्व करने वाला भाव है। अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी महिला होंगी तथा शत्रु या प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा एवं सामान्यतया आप स्वस्थता की ही अनुभूति करेंगी। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को सम्पन्न करने में रुचिशील रहेंगी। अतः आप (या कार्यरत न होने पर आपके पति) पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत हो सकती हैं। जीवन में ऋण आदि लेने की आपको कम ही आवश्यकता पड़ेगी तथा यदि लेंगी भी तो वापस करने में विशेष कठिनाई नहीं होगी जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगी। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यकलापों में आपकी अल्प मात्रा में ही रुचि रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कार्य करने पर अधिक विश्वास करेंगी। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्यबल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कर्म करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा तथा जीवन में शुभाशुभ दोनों प्रकार के व्ययों को करने में तत्पर रहेगी। यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इनको दूर करने में आप समर्थ रहेंगी साथ ही दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ होंगी। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने समस्त कार्यों को उत्साह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगी।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगी तथा परिवार का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में

समर्थ रहेंगी। जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी। अतः प्रसन्नता पूर्वक आप अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।



## कालसर्प योग

अग्ने राहुरघः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।

8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना ।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना ।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना ।
11. शिक्षा में बाधाएं आना ।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना ।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना ।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना ।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना ।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे ।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें ।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए । मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा । आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए ।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें । ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें ।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें ।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें । इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें । जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें ।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें ।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें ।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं ।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है ।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है ।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें ।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं ।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य और मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपके पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



# अंक शास्त्र

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने-संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतर्संबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

## अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 28 है। दो एवं आठ के योग से एक आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा आठ का शनि है। इन तीनों ही ग्रहों का संयुक्त प्रभाव आपके जीवन में आयेगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य जीवनदाता है एवं ब्रह्माण्ड में स्थिर ग्रह है। अन्य सभी ग्रह तो सूर्य के चक्कर लगाते हैं। अतः सूर्य ग्रह के प्रभाववश आप एक स्थिर प्रकृति की महत्वाकांक्षी, उदीयमान, प्रतिभाशाली महिला के रूप में पहचानी जायेंगी। आप स्वतंत्र विचार धारा की धनी होंगी। पराधीन कार्य करने में असुविधा महसूस होगी। आप प्रत्येक कार्य को स्वतंत्रता पूर्वक निष्पक्ष संपादन करने की हिमायती रहेंगी। इससे आपको प्रतिद्वन्दियों के विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप स्थायी एवं दीर्घ कालीन संबंध बनाने पर विश्वास करेंगी। आपकी कोशिश हमेशा यही रहेगी कि जब भी आप किसी के साथ मित्रता, व्यापारिक, सामाजिक, राजनैतिक अथवा प्रेम, रोमांस, इत्यादि के जो भी संबंध बनाएँ उनमें स्थायित्व रहे।

सूर्य जिस तरह प्रकाशित ग्रह है। उसी भाँति आप भी अपने जीवन में सदा प्रकाशित रहना पसन्द करेंगी। समाज वर्ग विशेष में मुखिया की भूमिका आप बखूबी निभाने की क्षमता रखेंगी। अपनी मेहनत के बल पर आप सभा-सोसायटी, संगठनों इत्यादि में प्रमुख पद को प्राप्त करेंगी।

अंक दो के स्वामी चन्द्र के कारण आपमें कल्पनाशीलता अच्छी रहेगी। आप जो भी सृजन करेंगी उसमें मौलिकता रहेगी। अंक आठ का स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से कभी-कभी आपके अन्दर नैराश्य भाव जाग्रत होगा। आलस्य में वृद्धि होगी और बनते हुये कार्यों में रुकावटें आयेंगी।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किशम की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगी। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगी। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्तिवश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 1 है तथा भाग्यांक 2 है। मूलांक 1 का स्वामी सूर्य है तथा भाग्यांक 2 का स्वामी चंद्र है। मूलांक स्वामी सूर्य का भाग्यांक स्वामी चंद्र से सम संबंध हैं। भाग्यांक स्वामी चंद्र

के प्रभाव से आपका भाग्यचक्र घटता-बढ़ता रहेगा। अपने जीवन में आपको विभिन्न परिवर्तन देखने को मिलेंगे। कभी आप भाग्य की ऊंचाइयों को प्राप्त करेंगी, तो कभी अवनति भी देखनी होगी। चंद्र प्रभाव से कल्पना शक्ति आप में अच्छी होगी और जो भी कार्य करेंगी सोच-विचार कर करेंगी। मूलांक एवं भाग्यांक आपस में सम होने से सूर्य एवं चंद्र के पूर्ण गुण-अवगुण आपके अंदर रहेंगे। आप एक उदीयमान सितारे की तरह अपने जीवन में चमकेंगी। सूर्य की उदीयमान किरणों की तरह आपका जीवन प्रकाशित होगा एवं भाग्य का सितारा चमकेगा, लेकिन चंद्र प्रभाव से कभी-कभी आप अमावस्या जैसे अंधकारमय दिन भी देखेंगी। आपकी सामाजिक स्थिति उच्च कोटि की रहेगी तथा समाज में आप अपनी मेहनत से मान-सम्मान प्राप्त करेंगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी गिनती सफल महिला के रूप में होगी।

मूलांक 1 तथा भाग्यांक 2 के प्रभाव से आपका भाग्योदय 20 वें वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा। 28 एवं 29 वर्ष पर उन्नति मिलेगी एवं 37 से 38 वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय का लाभ प्राप्त होगा।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 7, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जुलाई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 7, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

- 1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
- 2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
- 4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
- 7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
- 8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
- 9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित

होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।



# ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जाएंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पाएंगे। यह सूचना आपको भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पाएंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्ज्वल है।

## ग्रह फल

### सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

### चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में

प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

### मंगल

छेहेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छेहे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यों को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

### बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

### गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उच्चभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

## शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

## शनि

षष्ठम भाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, ब्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

## राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक कोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

## केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

# भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आयुर्दाय, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता-पिता, रिपु, विवाह एवं व्यय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा- भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शांत स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृत्ति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह का निश्चल भाव इनके अंदर विद्यमान रहता है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। धर्म के प्रति ये श्रद्धालु होते हैं तथा समाज एवं देश सेवा के कार्य में इनकी इच्छा रहती है। दूसरे लोगों की आंतरिक भावनाओं को समझने में ये चतुर होते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में उच्चाधिकार प्राप्त सम्मानित पद को अर्जित करने में सफलता प्राप्त करते हैं जिससे समाज में इनको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुंदर एवं दर्शनीय होगा तथा अन्य जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगी। आप एक विदुषी तथा बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी प्रायः अच्छी रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी एवं अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से करेंगी। इनमें आपको सफलताएं भी प्राप्त होंगी जिससे आपके सर्वत्र उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। धन एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी तथा उत्कृष्ट कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर होंगी।

आप एक कर्तव्यपरायण महिला होंगी तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। इससे आपके कार्य क्षेत्र के प्रभाव में सतत वृद्धि होगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगी। साथ ही मित्रों में भी आप आदरणीय एवं सम्माननीय समझी जाएंगी तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत होगा। संतति से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी विद्यमान रहेगी फलतः अन्य जनों के उपकार को आप स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक आभार प्रकट करेंगी।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा नियमित रूप से धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अवसरानुकूल सम्पन्न करती रहेंगी। जल क्रीड़ा के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा इससे आपको आनंद की अनुभूति होगी। ज्योतिष के प्रति भी आपकी श्रद्धा होगी तथा इसके ज्ञानार्जन में भी रुचिशील होंगी।

इस प्रकार आप शांत, दृढ़-प्रतिज्ञ, कर्तव्यपरायण, परिश्रमी एवं साहसी महिला होंगी तथा जीवन में सर्व सुखों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप कम बोलना पसंद करेंगी तथा सामान्यतया शान्त रहना ही आपको अच्छा लगेगा। आप आवश्यकता एवं अवसरानुकूल ही सार्थक वार्तालाप करेंगी। जीवन में वैभव शाली पदार्थों की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेगी। आपकी प्रवृत्ति शीघ्र क्रोधित होने की रहेगी परन्तु शीघ्र क्रोधित होकर शीघ्र शान्त भी हो जाएंगी। परिवार की शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को सुख सुविधाएं प्रदान करेंगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा अन्य मूल्यवान धातु एवं द्रव्यों से भी युक्त रहेंगी।

जमीन जायदाद संबंधी लाभ भी आप समय समय पर प्राप्त करती रहेंगी। साथ ही गृह एवं वाहन आदि का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा। आपकी वाणी स्पष्ट रहेगी तथा अन्य जन आपकी मृदुवाणी से प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आपके ठोस तर्कों से सभी लोग आपसे सामान्यतया सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप यथोचित व्यय करेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा धार्मिक कार्य कलापों का भी समय समय पर आयोजन करती रहेंगी। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन करने में भी समर्थ रहेंगी। इस प्रकार आप तथा भाग्यशाली, परोपकारी, धार्मिक प्रवृत्ति से युक्त तथा समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी।

## पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यों को करने में प्रवृत्त रहेंगी। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही अवसरानुकूल उनकी भलाई के कार्यों को सम्पन्न करती रहेंगी। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए परस्पर एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा यदा कदा अधिक वार्तालाप भी करेंगी। आपको अपने क्षेत्र में श्रेष्ठता या नेतृत्व प्राप्त होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही आप एक कुशल वक्ता होंगी तथा भाषा पर भी पूर्ण अधिकार रहेगा।

आधुनिक संचार की सुख सुविधाओं से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक टेलीफोन, दूरदर्शन या वाहन आदि का उपभोग करेंगी। आप संगीत प्रिय होंगी तथा कला के प्रति भी आपके मन में आकर्षण रहेगा आपका कंठ मधुर रहेगा फलतः अन्य लोग आपकी मधुर आवाज से प्रभावित रहेंगे। लेकिन सर्वप्रथम अपने सांसारिक कार्यों को पूर्ण करेंगी उसके बाद ही संगीत संबंधी कार्य सम्पन्न करेंगी। समय समय पर आपकी समीपस्थ यात्राएं होती रहेगी तथा इनसे आपको ख्याति तथा लाभ अर्जित होगा तथा पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध स्थापित करेंगी। नीति की भी आप ज्ञाता होंगी तथा आम चुनाव, लेख लिखने या पुस्तक प्रकाशन आदि से लाभ तथा ख्याति प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या की ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव एवं मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्ति की महिला होंगी।

## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सर्व सुखों से आप युक्त होंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों को भी अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप एक वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में अपना अनुकूल स्तर बनाए रहेंगी।

आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगी। आपको माता के द्वारा विशिष्ट सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। विवाह के बाद पति के सहयोग एवं प्रभाव से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी।

आपको जीवन में उत्तम एवं विस्तृत क्षेत्र में स्थित गृह भी प्राप्ति होगी तथा सुख पूर्वक इसमें निवास करेंगी। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगी तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त आपको उत्तमवाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका आप आनंद पूर्वक उपभोग करने में समर्थ होंगी।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमान एवं तेजस्वी महिला होंगी तथा पारिवारिक जनों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा व सम्मान का भाव रखेंगी तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्या अध्ययन के क्षेत्र में आप परिश्रमी होंगी तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने में सफल होंगी। प्रारंभिक कक्षाओं से ही आप अच्छे अंक अर्जित करेंगी तथा स्नातक परीक्षा काफी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करेंगी। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाने में समर्थ होंगी। आप व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ हो सकती है क्योंकि आपमें परिश्रम तथा बुद्धिमता दोनों भाव विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त मित्र संबंधी एवं अन्य लोग भी आपकी सफलता से प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगी।

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा बुद्धिमत्ता पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी परन्तु बुद्धि में तीक्ष्णता के भाव की न्यूनता होगी जिससे समस्याओं के समाधान में किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः आपको सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए तथा शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। नीचस्थ चन्द्र के प्रभाव से वैदिक एवं धर्मशास्त्रों में आपकी रुचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं भौतिक शास्त्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी एवं इस क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से वांछित ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप कोई शोध कार्य भी आप सम्पन्न कर सकती हैं। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग एक विदुषी के रूप में आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे।

पंचमभाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप की काफी रुचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाने का आप इसे साधन समझेंगे। इसमें मर्यादा एवं आदर्श की भावना भी कम ही होगी जिससे आपको समय समय पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त भावात्मक लगाव की अपेक्षा शारीरिक लगाव अधिक होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा कन्या सन्तति अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, योग्य एवं तेजस्वी प्रवृत्ति के होंगे तथा अपने इन गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे वे माता-पिता की आज्ञा का पालन करेंगे परन्तु रदा कदा अपनी मर्जी के कार्य भी करेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में माता-पिता की सलाह लेंगे वे व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः आपको उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए तथा उन पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालना चाहिए। इससे आपके सम्बन्धों में अनुकूलता बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति काफी परिश्रम एवं पराक्रम से ही सन्तोषजनक उन्नति करने में समर्थ होंगे। यद्यपि आप उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगी लेकिन वे इसका पूर्ण लाभ उठाने में समर्थ होंगी परन्तु वे व्यावहारिक प्रवृत्ति के होंगे तथा अपनी चतुराई से आजीविका अर्जन में समर्थ रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी प्रवृत्ति होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद भी हो सकता है लेकिन सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

## रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विदुषी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा शत्रुता के भाव की सामान्यतया उपेक्षा ही करेंगी। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक समय व्यतीत करने की इच्छुक रहेंगी परन्तु आपके शत्रु एवं विरोधी लोग इसमें व्यवधान उत्पन्न करेंगे तथा आपके सम्मान में न्यूनता एवं सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। अतः उनकी ऐसी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने के लिए कोर्ट में मुकद्दमे दायर कर सकती हैं। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रु वर्ग का सामना करेंगी तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगी। इस कार्य में आपकी बुद्धिमता तथा सहमित्रों का मंडल भी सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा परिवार या बन्धु वर्ग से भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको ही सफलता प्राप्त होगी। आप नैतिकता का अनुपालन करेंगी अतः शत्रु पक्ष का दमन करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगी। साथ ही पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए सर्वत्र यत्नशील रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी रहेगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा। जीवन में ऐसे अवसर अल्प मात्रा में ही आएंगे जबकि आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्ति पा जाएंगी। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि मामा से जीवन में आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता आएगी तथा वे आपको अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा जीवन में आपको मुकद्दमों आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंत में विजय आपको ही होगी। इस प्रकार आप समाज में एक आदरणीय तथा सम्मानीय समझी जाएंगी तथा अपने अच्छे संबंधों से अन्य जनों से उचित सहयोग एवं आदर प्राप्त करेंगी।

## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बुध भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया सप्तम भाव में मकर राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति एवं धनवान होता है तथा बुध के प्रभाव से वह बुद्धिमान कर्म करने में कुशल तथा कला एवं संगीत के प्रति प्रबल आकर्षण रखता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के चंचल व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को करने में अत्यंत ही दक्ष होंगे। वह अपने बुद्धिमता पूर्ण उत्कृष्ट कार्यों से सभी जनों को प्रभावित करेंगे। बुध के प्रभाव से उनमें सहिष्णुता एवं विद्वता का भी भाव रहेगा तथा कर्तव्य परायणता भी विद्यमान होगी। फलतः समाज एवं परिवार के प्रति वह अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे।

आपके पति सुंदर एवं गौरवर्ण की व्यक्ति होंगे तथा उनका कद भी मध्यम रहेगा उनकी शारीरिक संरचना दर्शनीय होगी तथा शरीर में पुष्टता बनी रहेगी इससे उनके व्यक्तित्व एवं आकर्षण में वृद्धि होगी। बोलने में भी वह चतुर होंगे तथा मधुर वाणी का उपयोग करेंगे। संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में रुचि होगी। इसके अतिरिक्त भौतिक सुन्दर वस्तुओं के प्रति भी आकर्षित होंगे तथा यत्नपूर्वक इनका संग्रह करने में तत्पर रहेंगे।

सप्तम भाव में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से भी प्रेम विवाह सम्पन्न कर सकती है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम समर्पण एवं सम्मान का भाव रहेगा जिससे आपसी संबंधों में मधुरता होगी। जीवन में सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे के सलाह तथा सहयोग से सम्पन्न करेंगे। आप दोनों बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे अतः परस्पर सामंजस्य स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा धनऐश्वर्य से वे सम्पन्न होंगे। विवाह में आपको मायके से दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। सास ससुर से आपके संबंधों में अनुकूलता रहेगी तथा परस्पर प्रेम एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। एक दूसरे को आप यथोचित सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति के मन में सेवा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। साले एवं सालियों को भी अपने सद्व्यवहार से वह प्रसन्न रखेंगे।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण योजना में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ रहेगी। यदि किसी संबंधी या मित्र आदि से साझेदारी करेंगी तो इससे लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

## आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म, ज्योतिष अथवा तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगी क्योंकि आप एक व्यावहारिक महिला तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको उचित नहीं लगता तथा अपने पराक्रम एवं कार्य पर आपका पूर्ण विश्वास रहेगा। पैतृक सम्पत्ति की आपको प्राप्ति होगी लेकिन यह अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु इसका आप पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि आपके पास पहले ही प्रचुर मात्रा में धनऐश्वर्य रहेगा तथा आवश्यक सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगी। आप एक सिद्धांतवादी महिला होगी तथा दाम्पत्य जीवन भी अच्छा रहेगा।

जीवन में आपकी कुंडली के अनुसार आपके घर में चोरी आदि की भी संभावना रहेगी लेकिन इससे कोई विशेष हानि नहीं होगी क्योंकि पुलिस या अन्य सूत्रों से आपको अपना सामान सही सलामत वापस मिल जाएगा। बीमा आदि करने से भी आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः इस क्षेत्र में अनावश्यक पूंजी निवेश न करें तथा अन्यत्र उसका सदुपयोग करें।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा यत्नपूर्वक दुर्घटना आदि की उपेक्षा करनी चाहिए तथा इससे बचने के लिए आवश्यक रूप से तैयार रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सम्पूर्ण सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

## प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगी तथा इसके प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी। साथ ही ध्यान या समाधि आदि में भी रुचिशील रहेंगी तथा अन्तर्दृष्टि भी प्रबल रहेंगी। ज्योतिष या तंत्र मंत्र के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा इसका न्यूनाधिक ज्ञान भी रहेगा। आप नियमित रूप से पूजा अर्चना करेंगी तथा आध्यात्मिक विषयों का पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा इन पर धारा प्रवाह भाषण करने में भी समर्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी धार्मिक संस्था से सम्बन्धित हो सकती है तथा उसमें कोई उच्च या सम्माननीय पद भी प्राप्त कर सकती हैं।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगी तथा इससे समाज में इच्छित मान सम्मान एवं ख्याति अर्जित करेंगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही परिश्रम एवं लगन के द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी तथा धार्मिक विषयों का व्यक्तिगत रूप से ज्ञान प्राप्त करेंगी। दैनिक पूजन सम्पन्न करने से आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति विकसित होगी तथा आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां सही सिद्ध होंगी।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको लाभ ऐश्वर्य एवं ख्याति प्राप्त होगी। साथ ही आप किसी दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकती हैं। आप परोपकार तथा सामाजिक जनों के हित कार्यों को करने में भी हमेशा तत्पर रहेंगी। पौत्रों से आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होगा तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों से इस जीवन में सुख ऐश्वर्य को अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक सन्तों के प्रति श्रद्धालु, मन्दिर, तालाब आदि परोपकार के कार्य करने वाली तथा आर्थिक रूप से समृद्ध रहकर अपना जीवन यापन करेंगी।

## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही बृहस्पति भी नवमेश होकर दशमभाव में मित्रराशि में स्थित है। मेष राशि अग्नि तत्व एवं बृहस्पति वायु तत्व ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक क्रिया प्रधान होगा तथा इसमें सतत उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर होंगी। साथ ही कार्यक्षेत्र से आप शांति एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

मित्रराशिस्थ बृहस्पति की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका की दृष्टि से शिक्षा विभाग, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, न्यायाधीश, वकील, वैरिस्टर, सचिव, सलाहकार, बैंक क्षेत्र, शेयर विभाग, व्यवस्थापक, प्रबंधक, कार्मिक विभाग या राजनीति के क्षेत्र में इच्छित उन्नति एवं मान सम्मान की प्राप्ति होगी। अतः आप अपने उज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही कार्यरत होना चाहिए। इससे आप सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा उन्नति के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आप बृहस्पति की शुभस्थिति से वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगी। आपको सुवर्ण आदि धातु का व्यापार, शेयर का क्रय विक्रय या शेयर ब्रोकर, वित्तकम्पनियों में पूंजी निवेश या सरकारी क्षेत्र के व्यापार या ठेके आदि से वांछित लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। यदि आप व्यापार के इच्छुक हैं तो आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का शुभारंभ करना चाहिए। इससे आप सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा अन्य समस्याओं से सुरक्षित रहेंगी।

दशमभाव में बृहस्पति की केन्द्र में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्च पद को भी प्राप्त करेंगी। साथ ही सामाजिक धार्मिक एवं अन्य संस्थाओं के भी आप पदाधिकारी हो सकती हैं। समाज में आप एक प्रभावशाली एवं अधिकार प्राप्त महिला होंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। अतः आपको निष्ठा एवं परिश्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए जिससे यथोचित समय पर आप मान सम्मान एवं अधिकारों की प्राप्ति कर सकें।

आपके पिता प्रभावशाली शिक्षित एवं बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण आदर तथा सम्मान रहेगा। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव होगा तथा आपके कार्यक्षेत्र में उनसे पूर्ण सहयोग की प्राप्ति होगी तथा उनके प्रभाव से आप इच्छित उन्नति सफलता एवं यश अर्जित करेंगी। साथ ही आप भी पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आप दोनों के परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप एक आज्ञाकारी पुत्री होंगी तथा पिता की सलाह एवं सहयोग से ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी।

## लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपकी जन्म कुंडली में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न प्रकार की सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी तथा महत्वाकांक्षा के भाव की भी प्रबलता दृष्टिगोचर होगी। जीवन में अपनी इच्छाओं तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति परिश्रम एवं पराक्रम से करने में सफल रहेंगी। आपका धनार्जन उत्तम रहेगा तथा आय स्रोतों की भी अधिकता रहेगी। यद्यपि आपका धनार्जन उत्तम रहेगा लेकिन बचत की प्रवृत्ति भी आप में रहेगी। अतः आर्थिक रूप से आपको कभी कोई परेशानी नहीं होगी। आपको ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से इच्छित लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा आप भी उनको इच्छित मान सम्मान प्रदान करती रहेंगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाने की इच्छुक रहेंगी तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक कार्य कलापों से आप उनका मनोरंजन करने में तत्पर रहेंगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों से अधिक होगा तथा इन्हीं क्षेत्रों से जीवन में आपको इच्छित धनार्जन एवं लाभ भी होगा। इस प्रकार मित्रों से युक्त होकर प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में आदरणीय तथा प्रतिष्ठित महिला समझी जाएंगी। अन्य सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करना आप अपना परमप्रिय कर्तव्य समझेंगी तथा इसी परिपेक्ष्य में किसी विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति भी होने की संभावना रहेगी। आप कभी कभी स्वयं ही एकाकीपन की अनुभूति करेंगी लेकिन आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख संसाधनों से तथा अन्य वैभव से युक्त रहकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

## विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत का अनुपालन करने वाली महिला होंगी तथा जीवन में इसका अनुकरण करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आपकी सतर्कता बनी रहेगी। साथ ही ईमानदार होगी अतः बेईमानी करने वालों से आपको घृणा रहेगी। आपका धनार्जन स्वयं की योग्यता तथा परिश्रम से ही अर्जित होगा। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से भाग्यशाली महिला होंगी।

जीवन में आपको आर्थिक कष्ट की अनुभूति अल्प मात्रा में ही होगी वास्तव में आपकी आवश्यकताएं सीधी सादी एवं सीमित मात्रा में रहेंगी तथा भौतिकता पर आपका विशेष आकर्षण नहीं रहेगा। इससे आपका व्यय सीमित तथा नियंत्रित रहेगा। आप शीघ्र लाभ अर्जित की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ की अधिक इच्छुक रहेंगी। धन संग्रह के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा व्यय के साथ बचत भी अवश्य करेंगी। इस प्रकार आपके समस्त पारिवारिक तथा अन्य व्यय आवश्यकता के अनुसार ही रहेंगे एवं इनमें अनावश्यक व्यय नहीं होगा जिससे आर्थिक सुदृढ़ता प्रायः बनी रहेगी साथ ही अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य के लिए कल्याणकारी योजनाओं पर भी व्यय करेंगी। इस प्रकार आप अपना धन बड़ी बड़ी कंपनियों पर लगाएंगी जहां से उचित लाभ प्राप्त होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं समय समय पर होती रहेंगी जिनसे प्रारंभ में व्यय होकर भविष्य में लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इसके साथ ही आपकी विदेश संबंधी कोई लाभदायक एवं उन्नतिकारक यात्रा भी सम्पन्न होगी। इस प्रकार आप धन-वैभव से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगी।

# वार्षिक फलादेश

वार्षिक फलादेश गोचर पर आधारित हैं जिसमें शनि, राहु एवं बृहस्पति के गोचर से आपकी जन्मकुंडली का कोई अंश ऊर्जावान होता है जिसके प्रभाव से आपके जीवन में आने वाले वर्ष के घटनाक्रम की जानकारी प्राप्त होती है।

वार्षिक फलादेश से उस वर्ष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों जैसे स्वास्थ्य, परिवार, संपत्ति, धन, आजीविका, व्यवसाय, शिक्षा, यात्रा एवं स्थानांतरण आदि का विवरण विस्तृत रूप में उपाय सहित दिया गया है। वार्षिक फलादेश मुख्य ग्रहों के गोचर पर आधारित है।

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

02 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यरहेगा। द्वादश स्थान केगुरु धनागम में रूकावट उत्पन्न करेंगे। जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है, परन्तु आपको मातुल पक्ष से लाभ होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको रूका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुधारने में इनका पूर्ण सहयोग होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर भी पैसा खर्च करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के

दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत उत्तम रहेगा। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद करा सकता है।

02 जूनके बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपकेसम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

### संतान

संतान कीदृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थगुरुपर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएँ हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य व शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

02 जून के बाद गुरु के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है। तो विवाह भी हो सकता है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रमण, सांस व पेट संबंधित बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

02 जून के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारिरीक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को मनोनुकूल सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को वर्षारम्भ में नौकरी मिल सकती है।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है। द्वादशस्थगुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

02 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी दर्शा रही है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थगुरु एवं नवमस्थ शनि के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। 02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आपगुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। मन्त्र जाप कर आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाएंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।

## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से नयी योजनाओं से लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। आप कम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा।

साझेदारी में काम करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है। 26 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी धन का व्यय हो सकता है।

26 नवम्बर के बाद सामाजिक कार्यों में व धार्मिक कार्यों में पैसा खर्च कर सकते हैं। भाइयों या ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है। अचानक धन लाभ होने के भी योग बन रहे हैं।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

26 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर

के बाद आपके सामाजिक मान संमान में और बढ़ेत्तरी होगी।

### संतान

संतान के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा।

26 नवम्बर के बाद दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएं व आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे और प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसम जनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 26 जून के प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी यह समय अच्छा है।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी। 03 जून के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक

करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आप का अटूट विश्वास रहेगा। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 26 जून के बाद मन्त्र सिद्धी व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन राहु ग्रह का दान आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। सप्तम स्थान के राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं परन्तु आप उसे भी अपने बौद्धिक बल से अनुकूल बना लेंगे।

24 मई के बाद व्यवसाय में सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो 24 जुलाई के बाद अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने कि उम्मीद है। अनुभवी व्यापारिक एवं वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे। आपका मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। आप बचत करने में सफल रहेंगे। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकते हैं।

फरवरी के बाद आपको रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पिता का अहम सहयोग होगा। मातुल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों में भी पैसे खर्च हो सकते हैं।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। फरवरी के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

## संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय शुभ है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा चल रहा है यदि बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी।

राहु ग्रह के गोचर के साथ आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो उससे छुटकारा मिल सकता है। छटे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित करेंगे।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए सामान्य रहेगा। आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि शिक्षा की दृष्टि से उत्तम है।

24 मई के बाद षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों को ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

## यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से लम्बी यात्राएं व तीर्थ यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि, नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण करा सकती है।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है, जिसके कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर गरीबों की सहायता भी करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में बांट दें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।
- गौ सेवा करें या गौशाला में चारा दान करें।



## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गि होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण सारे विरोधी शान्त होंगे। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अति उत्तम रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के लिए नये-नये तरीके अपनाएंगे व सफल भी होंगे। आपको लाभ मिलता रहेगा। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की अच्छी उन्नति होगी। छठे स्थान का राहु आपको ब्राण्ड नेम भी दिला सकता है।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख सुविधा पर आप अधिक खर्च करेंगे। आय के स्रोत और उत्तम होंगे। निवेश के लिए समय अच्छा चल रहा है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की स्थिति पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति के योग बना रही है। अचानक धनागम का योग बनेगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

08 अगस्त के बाद आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

तृतीयस्थ मंगल के प्रभाव से सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। माता-पिता के साथ भावनात्मक लगाव

बढ़ेगा। बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

### संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। उच्च शिक्षा के लिए समय उत्तम नहीं है परन्तु प्रतियोगिता परीक्षा में आप सफल होंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

आपके बच्चों का किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

### स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छटे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ा रहे हैं जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

इस समय के अंतराल में आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में और अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अहं भाव ना आने दें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

### यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

29 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। 05 अक्टूबर के बाद तीर्थ यात्रा या परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी। किसी तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं तो उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें, अन्यथा उसमें व्यवधान आ सकता है। 25 अगस्त के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष आयोजन कर सकते हैं जैसे- भगवती जागरण, माता की चौकी

इत्यादि ।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं ।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं और केतु मन्त्र का पाठ करें ।



## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

### व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। फरवरी से आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने काम को पूरा करके ही रहेंगे

17 अप्रैल से समय व्यावसायिक स्तर आपके लिए बेहतर होने वाला है। आपको पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। भले ही गुरु एवं राहु की युति थोड़ी अड़चने देगी किन्तु सफलता आपके कदम चूमेगी। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आय भाव पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। 04 फरवरी से आपकी आर्थिक उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। वित्तीय मामलों में आपको निराशा हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। आपकी राह में अवरोध उत्पन्न किया जा सकता है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं।

01 मई से आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे यह समय आपके लिए लाभकारी रहेगा। यदि अनपेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिए मत अपितु उसका लाभ उठाएं। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी मौके आएंगे।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि

प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। परिवार के प्रत्येक मसले पर आपको बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है।

मई से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा, क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो परिवार के लिए हितकर होंगे। परिवार के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

### संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान में गुरु चण्डाल योग संतान हानि का योग बना रहा है।

गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। अप्रैल के बाद सन्तान के लिए समय अच्छा रहेगा।

### स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य रहेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप आलसी हो जाएंगे और आपके रवैये में भी परिवर्तन आएगा। आपको अपने खान-पान और दिनचर्या पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है ताकि आप इस तरह की भावनाओं से बच सकें। आपके जीवन में इस साल कुछ अच्छे पल भी आएंगे किन्तु ऐसा भी समय आएगा जब आप अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन से सम्बंधित चिंताओं से घिरे रहेंगे

स्वस्थ रहने के लिए आप योग और ध्यान का सहारा लें और प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं। स्वास्थ्य को लेकर यह साल वैसे तो आपके लिए ठीक-ठाक ही रहेगा लेकिन अपने खान-पान को लेकर सतर्क रहें। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति उदर रोग दे सकती है। अतः मसालेदार या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम से कम करें।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठतम रहेगा परन्तु 04 फरवरी के बाद से समय प्रभावित हो रहा है। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण

होगा। विदेश यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र भी ले सकते हैं और उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं। पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा भी करेंगे। अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं और महालक्ष्मी मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- राहु ग्रह का दान करें और उसके मन्त्र का पाठ करें।



# दशा विश्लेषण

दशा विश्लेषण घटना के समय निर्धारण में दशा स्वामी की भूमिका के विषय में बताता है। कुंडली में दशा स्वामी की स्थिति के अनुसार फलादेश से अवगत कराता है। साथ ही दशाकाल में किस से सतर्क रहें व क्या उपाय करें इसका ज्ञान कराता है।

अच्छे या बुरे दशा के प्रभाव स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समय-समय पर खड़ा-मीठा अनुभव होता रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की जन्मकुंडली में शुभ एवं अशुभ योग होते हैं। यदि अच्छे ग्रह की दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। दूसरी ओर यदि बुरे ग्रह की दशा चलती है तो आपके समक्ष समस्याएं, बाधा, कष्ट, पीड़ा आदि उपस्थित होते हैं।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध  
( 19/02/2011 - 19/02/2028 )**

बुध की महादशा 19/02/2011 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 19/02/2028 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपकी यात्रा, शक्ति में वृद्धि, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा सम्बन्धियों से सहायता मिली होगी। बुध की इस दशा में आपकी जीवन वृद्धि में उन्नति, साझेदार से लाभ और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति उत्तम रहेगी। फिर भी मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक समस्या, उदर रोग आदि हो सकता है। आपमें वायु, पित्त तथा कफ तीनों दोषों का मिश्रण है, अतः आपके लिए सामान्य उपचार आवश्यक है।

**अर्थ और व्यवसाय :**

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जीवन साथी तथा साझेदार से भी लाभ मिल सकता है। सट्टे में पर्याप्त लाभ हो सकता है। विदेश से व्यापार लाभदायक हो सकता है। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तु का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ मिलेगा और आय तथा सम्मान में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल होगी तथा सफलता और पदोन्नति प्राप्त होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोग अच्छा करेंगे। समाज में आपकी छवि उत्तम होगी, व्यापार में विस्तार और आय में वृद्धि होगी। कार्य के सिलसिले में आप यात्रा पर जा सकते हैं। जीवन में प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी तथा वाहन का सुख भी मिलेगा। शनि की अन्तर्दशा में आपकी छोटी लाभदायक यात्रा तथा मंगल की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

**शिक्षा :**

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप प्रतियोगिताओं तथा परिचर्चा में अच्छा करेंगे और आपकी वाक्पटुता उत्तम होगी। आप समूह-परिचर्चा तथा ऐसी अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता तथा समाचार माध्यम और जनसंचार में आपकी रुचि होगी। अन्य प्रतिभाशाली, कूटनीति और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका मस्तिष्क विवेकपूर्ण और विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

बच्चों के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे। आपके जीवन साथी को सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को जमीन-जायदाद सुख और मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता को सफलता और लाभ मिलेगा तथा मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहन को सट्टे में लाभ तथा सुख की प्राप्ति और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। इस दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी, सफलता मिलेगी और अध्यात्म की ओर झुकाव होगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह होगा, माता-पिता से लाभ मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपको कुछ लाभ और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र दशा में कुछ परिवर्तन और अचानक लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में बच्चों से सुख और सट्टे में लाभ मिलेगा। राहु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख, यश और ख्याति मिलेगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और लाभ हो सकता है।

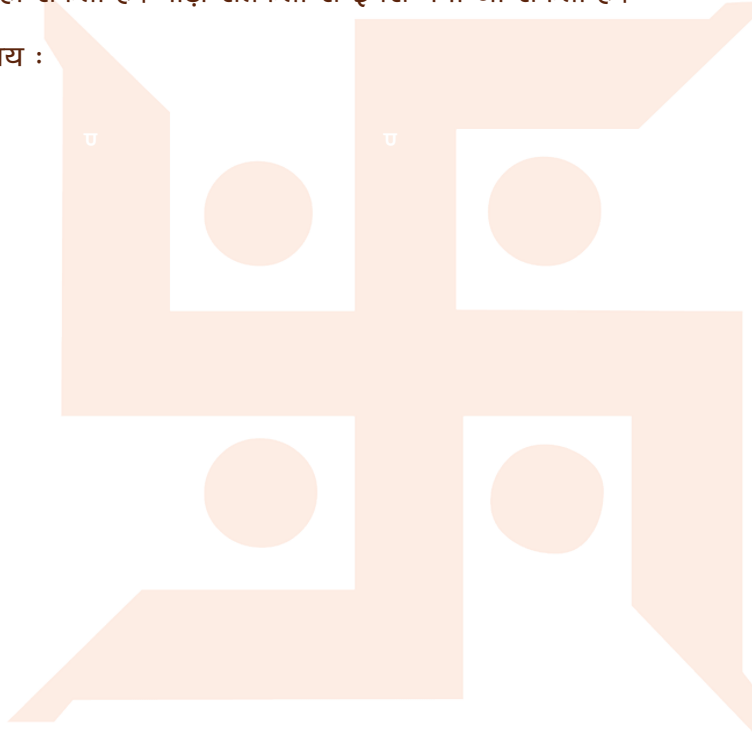
**महादशा :- केतु  
( 19/02/2028 - 19/02/2035 )**

केतु की महादशा 19/02/2028 को आरम्भ और 19/02/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में केतु द्वितीय भाव में स्थित है। केतु की अष्टम भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको लाभ, अच्छी शिक्षा, पारिवारिक सुख और सट्टे के कार्यों में लाभ हुआ होगा। केतु की इस दशा में आपको सुख तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप आपको संक्रामक बीमारी, विषाणु जाति बुखार, गले में संक्रमण, फोड़ा-फुन्सी, साँस सम्बन्धी बीमारियाँ आदि हो सकती हैं। थोड़ी सतर्कता से इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :



इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको विरासती सम्पत्ति अथवा अप्रत्याशित स्रोतों से धन की प्राप्ति हो सकती है। सट्टे से लाभ की सम्भावना भी है व्यवसाय-व्यापार में भी धनोपार्जन अच्छा होगा। जीविका के लिये कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, लेखन, गणित, विदेशी भाषा, दवा, वायु सेना, लेख-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़े, रत्न, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, लेखन-सामग्री, किताब, समाचार पत्र, घड़ी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, पदोन्नति तथा आय में वृद्धि होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहायकों का सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों की सदेख मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा और उनकी आय अच्छी होगी। आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी तथा व्यापार का विस्तार और व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि होगी।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी। सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। आपको सुन्दर वाहन का सुख मिलेगा। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। मामूली नुकसान के प्रति सावधानी बरतें। मंगल की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राओं की सम्भावना है जो लाभदायक होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप तेज और क्रियाशील हैं और सभी प्रतियोगिताओं तथा परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों, कम्प्यूटर-प्रौद्योगिकी, लेखा-कार्य, भोजन प्रौद्योगिकी लेखन, गणित और बैंकिंग में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे सफल और समृद्धिशाली होंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के जीवन में कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। परिवार में अच्छे सम्बन्ध बनायें रखने के लिये आपको कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता को सभी प्रकार का लाभ, वाहन सुख और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी जबकि आपके पिता को विरोधियों पर विजय मिलेगी और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। आपके छोटे भाई-बहनों का कुछ व्यय होगा, उनकी यात्रा और उनके जीवन में कुछ परिवर्तन होगा जबकि बड़े भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, तकनीकी शिक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सभी सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। शुक्र की अन्तर्दशा में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और सम्पत्ति, सुख और सफलता की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में वाहन और मकान की प्राप्ति होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि चंद्र की अन्तर्दशा के दौरान लोकप्रियता और भाई-बहनों से लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यय होगा जबकि राहु कुछ समस्या खड़ी कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य समस्या और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के दौरान जीवन-वृत्ति में सफलता और समृद्धि मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में अच्छी शिक्षा, सट्टे की गतिविधियों में सफलता और सुख मिलेगा।

**अंतर्दशा :- केतु - केतु  
( 19/02/2028 - 17/07/2028 )**

आपके लिए केतु महादशा 19/02/2028 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/02/2028 को प्रारंभ होकर 17/07/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। रिश्तेदारों के साथ कुछ मतभेद हो सकते हैं मगर वे शांतिपूर्वक सुलझ जाएंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से संपर्क होगा जो लाभकारी रहेगा। अचानक धनलाभ हो सकता है। साझेदार से लाभ होगा, विरासत में धन आ सकता है। तंत्र-मंत्र में सफलता मिल सकती है। विदेश यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को विरासत में धन मिल सकता है। आपके पिता लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। माता का धनार्जन उत्तम होगा, सफल होंगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए खर्च, उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, लोकप्रिय बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से उत्तम संबंध रहेंगे, भाग्यशाली होंगे। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा, धनी बनेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है; अचानक धनागम हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख ओर दांतों की व्याधियों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए भूरा कुत्ता पालें।

**अंतर्दशा :- केतु - शुक्र  
( 17/07/2028 - 16/09/2029 )**

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आप धनी और प्रसिद्ध होंगे। जीवन सुख-सुविधापूर्ण होगा। बड़ों और गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त होगा। विवाह हो सकता है। दान-धर्म के कार्यों में भाग ले सकते हैं। कला में दक्षता की संभावना है। लाभदायक लघु यात्राएं हो सकती हैं। विज्ञापन क्षेत्र में सक्रियता के लिए समय उपयुक्त है। सफलता स्वयं के प्रयास से ही मिल जाएगी।

आपके जीवनसाथी सफलता प्राप्त करेंगे। आपके पिता भी सफल होंगे। माता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, आराम, संभवतः विवाह, सफलता और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है।

आपकी संतान के लिए समय शुभ रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, धनी बनेंगे, विवाहित जीवन सुखी रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पुरानी साख से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारियों की आय अच्छी होगी, लघु यात्राएं होंगी, स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली गठिया आदि व्याधि हो सकती है।

### **अंतर्दशा :- केतु - सूर्य ( 16/09/2029 - 22/01/2030 )**

आपके लिए केतु महादशा 19/02/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 16/09/2029 को प्रारंभ होकर 22/01/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपके जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं घट सकती हैं। अचानक धनागम हो सकता है। कार्यक्षेत्र में उतार-चढ़ाव के बावजूद सफलता मिलेगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। शिक्षाक्षेत्र में सफल हो सकते हैं; वाक्शक्ति द्वारा गुरु और बड़ों को प्रसन्न कर सकते हैं। सरकार के माध्यम से धनागम हो सकता है। परिवारजनों से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके बड़े भाई-बहनों को कार्यों में सफलता मिलेगी, लोकप्रिय बनेंगे, धनागम उत्तम होगा, स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, निवेश से लाभ होगा, दर्शनशास्त्र का अध्ययन कर सकती हैं; उन्हें संतान के माध्यम से सुख मिलेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, सुख-साधन संपन्न होंगे; माता-पिता से उत्तम संबंध रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो साहित्य और संचार-माध्यम से लाभ हो सकता है। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को साझेदार के माध्यम से लाभ होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। चोट और उष्मा से संबंधित व्याधिओं से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

### **अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र ( 22/01/2030 - 23/08/2030 )**

आपके लिए केतु महादशा 19/02/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 22/01/2030 से प्रारंभ होकर 23/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आपको प्रोन्नति मिल सकती है। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। सैर सपाटे की इच्छा पूर्ण हो सकती है। धनार्जन उत्तम होगा; प्रसन्न रहेंगे। तरल और जलीय पदार्थों के व्यापार में लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी के पास सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता का पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। माता सफल होंगी, प्रसिद्धि प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए बहुत से मित्र, धन, संतान से प्रसन्नता और सफलता का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली होगी, प्रसन्न रहेगी और परीक्षा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, बाधाएं आ सकती हैं। परामर्शदाताओं को पहले किये निवेश से लाभ होगा। व्यापारी मार्केटिंग में कुशलता द्वारा धन कमा सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। श्वसन तंत्र की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

**अंतर्दशा :- केतु - मंगल  
( 23/08/2030 - 19/01/2031 )**

आपके लिए केतु की महादशा 19/02/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 23/08/2030 को प्रारंभ होकर 19/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। आय और धन में वृद्धि होगी। कार्यक्षमता बढ़ेगी। आपके किरायेदार आपसे सहयोग करेंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा हो सकती है। अध्यात्म में रुचि ले सकते हैं। सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है। पिता के साथ मधुर संबंध होंगे; उनसे आपको लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे; उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। माता उत्साही होंगी; कार्यक्षमता बढ़ेगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा, परिवर्तन, अप्रत्याशित लाभ और परीक्षा में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की आय अच्छी होगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यों में सफल रहेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, रोगनिरोधक क्षमता बढ़ेगी। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।